



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 268 ]

नई दिल्ली, शुक्रवार, दिसम्बर 3, 1999/अग्रहायण 12, 1921

No. 268 ]

NEW DELHI, FRIDAY, DECEMBER 3, 1999/AGRAHAYANA 12, 1921

वाणिज्य मंत्रालय

(पाटनरोधी तथा सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 3 दिसम्बर, 1999

प्रारंभिक जांच निष्कर्ष

विषय :—पोलैण्ड, दक्षिण कोरिया, इंडोनेशिया, सऊदी अरब, रूस, ईरान, यू.एस.ए. तथा यूरोपीय संघ से ओक्सो अल्कोहल के आयात के संबंध में पाटनरोधी जांच की शुरुआत—प्रारंभिक जांच निष्कर्ष।

सं. 15/1/99-डीजीएडी.—सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (1995 में यथासंशोधित) तथा सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आंकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए ;

क. कार्य पद्धति

जांच के लिए निम्नलिखित कार्य पद्धति अपनाई गई है:-

(i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे इसके बाद प्राधिकारी कहा जाएगा) को उपरोक्त नियमावली के अधीन घरेलू उद्योग की ओर से ओक्सो अल्कोहल इंडस्ट्रीज एसोसिएशन से लिखित आवेदन प्राप्त हुआ है जिसमें पोलैण्ड, दक्षिण कोरिया, इंडोनेशिया, सऊदी अरब, रूस, ईरान, यू.एस.ए. तथा यूरोपीय संघ मूल के अथवा वहां से निर्यात किए ओक्सो अल्कोहल (जिसे इसमें इसके बाद सम्बद्ध माल भी कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाया गया है।

( ii ) याचिकाकर्ताओं द्वारा दायर की गई याचिका की आरंभिक जांच से कुछ त्रुटियों का पता लगा जिन्हें याचिकाकर्ताओं ने बाद में ठीक कर दिया था । इसके बाद याचिका को विधिवत् प्रस्तुत दस्तावेज माना गया है ।

( iii ) याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्ष्यों के आधार पर प्राधिकारी ने पौलैंड, दक्षिण कोरिया, इंडोनेशिया, सऊदी अरब, रुस, ईरान, यूएसए, तथा यूरोपीय संघ से ओक्सो अल्कोहल के आयातों की जांच आरंभ करने का निर्णय किया है । प्राधिकारी ने उक्त नियम के उपनियम 5(5) के अनुसार जांच शुरू करने से पहले पाटन के आरोप की सूचना पौलैंड, दक्षिण कोरिया, इंडोनेशिया, सऊदी अरब, रुस, ईरान, यूएसए, तथा यूरोपीय संघ के दूतावासों को दी थी ।

( iv ) प्राधिकारी ने सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की अनुसूची 1 के सीमाशुल्क कोड 2905 के अंतर्गत वर्गीकृत पौलैंड, दक्षिण कोरिया, इंडोनेशिया, सऊदी अरब, रुस, ईरान, यू.एस.ए. तथा यूरोपीय संघ (जिन्हें इसके बाद सम्बद्ध देश भी कहा गया है ) के मूल के या वहां से निर्यातित ओक्सो अल्कोहल के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच आरंभ करते हुए भारत के राजपत्र, असाधारण में दिनांक 29 जुलाई, 1999 को प्रकाशित एक सार्वजनिक सूचना जारी की ।

( v ) प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की एक प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों (जिनके ब्यौरे याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध कराए गए थे) तथा उद्योग संघों को भेजी और उन्हें नियम 6(2) के अनुसार अपने विचार लिखित रूप में देने का अवसर प्रदान किया ।

( vi ) नई दिल्ली में सम्बद्ध देशों के दूतावासों को भी नियम 6(3) के अनुसार जांच आरंभ होने की सूचना दे दी गई थी और उनसे अनुरोध किया गया था कि वे अपने-अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों से निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली भर कर भेजने का आग्रह करें । निर्यातकों को भेजे गए पत्र, याचिका

और प्रश्नावली की प्रति ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों की सूची सहित दूतावासों को भी भेजी गई थी ।

( vii ) प्राधिकारी ने भारत में ओक्सो अल्कोहल के सभी ज्ञात आयातकों (जिनका विवरण याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध कराया गया था) को सार्वजनिक सूचना की एक प्रति भेजी थी और उनसे पत्र के जारी होने की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचार लिखित रूप में प्रस्तुत करने को कहा गया था । याचिका की एक प्रति अन्य हितबद्ध पार्टियों को भी दी गई थी ।

(viii) केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमाशुल्क एक बोर्ड (सीबीईसी) तथा वाणिज्यिक आसूचना तथा सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से जांच अवधि सहित पिछले 3 वर्षों में भारत में ओक्सो अल्कोहलके आयातों का विवरण देने का अनुरोध किया गया था ।

( ix ) अनेक पार्टियों ने समय बढ़ाने के लिए अनुरोध किया था, जिसे प्राधिकारी ने चार सप्ताह बढ़ाने की अनुमति दे दी थी ।

( x ) प्राधिकारी ने जहां आवश्यक समझा याचिकाकर्ताओं के परिसरों की मौके पर जांच भी की थी ।

( xi ) क्षति के बारे में याचिकाकर्ताओं से अतिरिक्त सूचना मांगी गई थी जो उन्होंने दे दी थी ।

( xii ) प्राधिकारी ने अपने द्वारा रखी गई सार्वजनिक फाइल के रूप में विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा दिए गए साक्ष्यों के अगोपनीय अंश उपलब्ध रखे और उन्हें हितबद्ध पार्टियों को देखने के लिए खुला रखा ।

( xiii ) \*\*\*\*\* यह चिह्न इस अधिसूचना में हितबद्ध पार्टियों द्वारा गोपनीय आधार पर दी गई सूचना तथा नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा उसे गोपनीय ही माने जाने का द्योतक है ;

( xiv ) जांच 1 अप्रैल, 1998 से 31 मार्च, 1999 तक की अवधि के लिए की गई थी ;

( xv ) सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) तथा याचिकाकर्ताओं द्वारा दी गई सूचना के आधार पर भारत में सम्बद्ध माल की इष्टतम उत्पादन लागत तथा माल को बनाने और बेचने की लागत का हिसाब लगाने के लिए लागत जांच भी की गई थी ताकि इस बात का भी पता लगाया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा ।

( xvi ) अधिकारी ने नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मंगाने के लिए निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को एक प्रश्नावली भेजी ;

- अराक पेट्रोकेमिकल कंपनी, ईरान
- पेट्रोकेमिकल कमर्शियल कंपनी, ईरान
- तबरिज पेट्रोकेमिकल कम्पलैक्स, ईरान
- ईस्टमैन कैमिकल कंपनी, यू.एस.ए.
- क्रीटाइन कोटिंग कंपनी इंक- यू.एस.ए.
- अल्फा एस्सर - यू.एस.ए.
- आईसीसी कैमिकल कारपोरेशन- यू.एस.ए.
- विनमार् इंटरनेशनल लि0, यू.एस.ए.
- यूनियन कार्बाइड - यू.एस.ए.
- आर्टिसटैक कैमिकल कारपोरेशन - यू.एस.ए.
- लक्को लि0 - कोरिया गणराज्य
- एल जी कैमिकल्स लि0, कोरिया गणराज्य
- ज़ाकलेडी अजोटोबेकेडिजिएर्जिन - पोलैण्ड
- अल-जुबेल फर्टीलाइजर्स कं0, सऊदी अरब
- पीटी. पेट्रोविडाडा - इंडोनेशिया
- हल्स अक्टलेगेसैलसैफ्ट - जर्मनी
- बीएसएफ - जर्मनी

- एचईएलएम एजी - जर्मनी
- होएचसोस्ट सेलेनीज - जर्मनी
- कैमिस्चे वर्क ह्यूल्स - जर्मनी
- कौडिया कैमी गम्भ - जर्मनी
- नैसेल कैमिकल्स - स्वीडन
- निझनेटामस्क - रूस

( xvii ) नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मंगाने के लिए निम्नलिखित ज्ञात आयातकों को एक प्रश्नावली भेजी गई थी ;

- रचना प्लास्टिसाइजर्स - मुंबई
- केएलजे प्लास्टिसाइजर्स - नई दिल्ली
- पीसीएल इंटरप्राइसिज़ लि० - नई दिल्ली
- इंडो-निप्पन कैमिकल कं० लि० - मुंबई
- विजन आर्गेनिक्स प्रा० लि० - बडौदा
- एचएमजी इंडस्ट्रीज लि०, - मुंबई
- एपीआई इंडस्ट्रीयल कारपोरेशन - दिल्ली
- सी जे शाह एंड कंपनी, - मुंबई
- हर्ष कुमार एंड कंपनी, मुंबई
- विकास आर्गेनिक्स प्रा० लि०, नई दिल्ली
- कोठारी पोलिमर्स लि०, नई दिल्ली
- पायल कैमिकल्स इंडस्ट्रीज लि०, - नई दिल्ली
- टेक्सपो ट्रेडिंग प्रा० लि० - मुंबई
- गुलजॉय इंडस्ट्रीज लि०, जोधपुर - राजस्थान

( xviii ) जांच प्रारंभ करने संबंधी नोटिस की प्रतियां व्यापक प्रचार हेतु इंडियन प्लास्टिसाइजर्स मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन, फिक्की, सीआईआई, एसोचेम आदि को भी भेजी गई थी ।

## ख. याधिकाकर्ताओं के विचार

2. याधिकाकर्ताओं ने अपने अनुरोध में निम्नलिखित मुद्दे उठाए हैं :

(क) ओक्सो अल्कोहल प्लास्टिसाइजर्स के उत्पादन में तथा पेंट उद्योग में, भेषजीय पदार्थों में ल्यूब ऑयल एडिटिव्स तथा एक्रीलिक्स में एक महत्वपूर्ण निविष्टि है। भारत में ओक्सो अल्कोहल का उत्पादन 30 वर्षों से किया जा रहा है। भारत में इसके तीन विनिर्माता हैं, अर्थात् नेशनल आर्गेनिक कैमिकल्स इंडस्ट्रीज लि०, (एनओसीआईएल), दी आंध्र पेट्रोकेमिकल्स लि० (एपीएल) तथा इंदू निसान ओक्सो कैमिकल इंडस्ट्रीज लि० (आई एन ओ सी आई एल) है। इन तीनों उत्पादकों की संयुक्त क्षमता देश की मांग को पूरा करने के लिए लगभग पर्याप्त है।

(ख) ओक्सो अल्कोहल का उत्पादन करने के लिए प्रोपीलीन प्रमुख कच्ची सामग्री है। नेप्था आधारित पेट्रोकेमिकल्स की कीमतों में 1995-96 में बहुत वृद्धि हुई थी। इस अवधि में ओक्सो अल्कोहल की कीमतें 1200 अमरीकी डालर/मी० टन से भी अधिक हो गई थी। तथापि पेट्रो-कैमिकल उद्योग में विश्वव्यापी मंदी होने के कारण पेट्रोकेमिकल उत्पादों की कीमतों में तेजी से गिरावट आई है। इसके फलस्वरूप ओक्सो अल्कोहल की कीमतें काफी कम होकर 300-350 अमरीकी डालर/मी० टन तक हो गई हैं। ओक्सो अल्कोहल की कीमतों में कमी निविष्टि सामग्री की कीमतों में हुई कमी के अनुरूप नहीं हैं। इन कम कीमतों से पाटन का संकेत मिलता है। स्पष्ट रूप से, उपलब्ध पर्याप्त बेशी क्षमताओं तथा विश्व में मंदी को देखते हुए इस उत्पाद को बेचने के लिए भारतीय बाजार सर्वश्रेष्ठ बाजार पाया गया। भारतीय बाजार में अनेक देशों से ओक्सो अल्कोहल का बड़े पैमाने पर पाटन हुआ है।

(ग) घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित आक्सो अल्कोहल पोलैण्ड, द० कोरिया, इन्डोनेशिया, सऊदी अरब, जर्मनी, रूस, ईरान, स्वीडन, यूएसए और नीदरलैंड से आयात किए जा रहे आक्सो अल्कोहल का स्थानापन्न है। घरेलू उद्योग देश की आक्सो अल्कोहल की माँग को पूरा करने में काफी हद तक समर्थ है। तथापि इन देशों से आयातों की मात्रा में पर्याप्त वृद्धि हुई है और इससे घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है। घरेलू उद्योग की क्षमता 87000 मी० टन प्रतिवर्ष की है। लेकिन यह पाटित आयातों में पर्याप्त वृद्धि के कारण चालू वर्ष में अपनी क्षमता का केवल 55% ही उपयोग कर सका है।

§ ४४ स्वीडन, जर्मनी और नीदरलैंड के विनिर्माता भारत में आक्सो अल्कोहल का पाटन कर रहे हैं और ये देश यूरोपीय संघ के सदस्य हैं। यूरोपीय संघ में आक्सो अल्कोहल के और भी अनेक उत्पादक हैं। वस्तुतः सामान का आयात यूरोपीय संघ के अन्य अनेक देशों से किया जा रहा है। यूरोपीय संघ में सीमाशुल्क संबंधी कोई अवरोध नहीं है और यूरोपीय संघ में प्रचलित कीमतों का स्तर एक जैसा होता है। यूरोपीय संघ पर सम्पूर्ण रूप से आक्सो अल्कोहल के आयातों के खिलाफ शुल्क लगाए बिना पाटनरोधी शुल्क का लगाया जाना कारगर सिद्ध नहीं होगा क्योंकि इन तीनों देशों के खिलाफ पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद अन्य उत्पादक उन कीमतों पर आक्सो अल्कोहल का निर्यात शुरू कर सकते हैं जिन कीमतों पर इसका निर्यात स्वीडन, जर्मनी और नीदरलैंड के उत्पादकों द्वारा किया जा रहा है। इसके, परिणामस्वरूप भारतीय बाजार में पाटन जारी रहेगा। इन देशों के निर्यातकों/उत्पादकों द्वारा पाटनरोधी शुल्क की धोखाधड़ी करना भी कठिन नहीं होगा। निर्दिष्ट प्राधिकारी से अनुरोध है कि यूरोपीय संघ के अनेक अन्य देशों और जर्मनी, स्वीडन तथा नीदरलैंड के विरुद्ध अलग-अलग जाँच शुरू की जाए।

(ड) भारतीय आक्सो अल्कोहल उद्योग को भारी मात्रा में पाटन से गंभीर क्षति हो रही है। 300-350/-मी० टन अमरीकी डालर की मौजूदा अन्तर्राष्ट्रीय कीमत भारतीय उत्पादकों की उत्पादन लागत से काफी कम है। यदि भारतीय बाजार में कीमत का यह रुख जारी रहा तो घरेलू उद्योग को अपना उत्पादन बंद करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा।

॥घ॥ भारत में इन उत्पादों के व्यापक स्तर पर पाटन से भारतीय उद्योग को गंभीर क्षति हो रही है। इसलिए उक्त तीनों उत्पादकों ने संयुक्त रूप से अपने संगठन के जरिए निर्दिष्ट प्राधिकारी, वाणिज्य मंत्रालय को निर्धारित प्रोफार्मा में और निर्धारित तरीके से एक याचिका प्रस्तुत की है।

॥छ॥ याचिकाकर्त्ताओं के मुख्य अनुरोध नीचे दिए गए हैं :-

॥१॥ संघट्ट देशों से आयात में समग्र रूप से काफी वृद्धि हुई है।

॥१।१॥ भारत में आक्सो अल्कोहल के कुल आयात के सन्दर्भ में संघट्ट देशों से आयात में वृद्धि हुई है;

॥१।१।१॥ भारत में आक्सो अल्कोहल की मांग के सन्दर्भ में संघट्ट देशों से आयात में वृद्धि हुई है। जिसके परिणामस्वरूप, घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है ;

॥१।१॥ घरेलू उद्योग में आक्सो अल्कोहल के उत्पादन में गिरावट आई है;

॥११॥ घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में गिरावट आई है;

॥१।१॥ घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में वास्तविक गिरावट आई है;

॥१।१॥ घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में तेजी से गिरावट आई है;

॥१।१।१॥ बिक्री कीमतों में काफी कमी करने के बावजूद आयातों की वजह से घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में बहुत गिरावट आयी है;

॥१।१॥ निर्यात कीमत पहले ही घटकर 310 अमरीकी डालर प्रति मी०टन हो गई है, जिसका पहुँच मूल्य याचिकाकर्त्ताओं की अलग-अलग उत्पादन लागत से कम है।

॥११॥ घरेलू उद्योग की लाभदता में काफी कमी आई है। घरेलू उद्योग जो लाभ की स्थिति में था, उसे अब घाटे की स्थिति का सामना करना पड़ रहा है।

॥१।१॥ घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले सभी मापदंड सांख्यिक रूप से और संक्षेप रूप से यह दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग को पाटित आयातों से वास्तविक क्षति हुई है। इसके अलावा निर्यात कीमत में लगातार और भारी गिरावट से क्षति की मात्रा में दिन-प्रतिदिन बढ़ोत्तरी हो रही है।



### ४ ग ४ आयातकों, प्रयोक्ताओं एवं निर्यातकों के विचार;

30। आयातकों और प्रयोक्ताओं के अनेक संगठनों ने प्रश्नावली का उत्तर दिया है और जाँच के संबंध में अपने विचार दिए हैं। उत्तर देने वालों में इंडियन प्लास्टि-साइजर्स मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन, मे० के एल जे प्लास्टिसाइजर्स, मे० के एल जे पालीमर्स एंड केमिकल्स लि०, मे० पीसीएल इन्टरप्राइजेज लि०, मे० विकास ऑर्गेनिक्स प्रा० लि०, मे० विजय ऑर्गेनिक्स प्राइवेट लि०, मे० एपीआई इंडस्ट्रियल कारपोरेशन, मे० एन के पालीमर्स एंड मैनुफैक्चरिंग कंपनी इत्यादि शामिल हैं। उनके द्वारा प्रस्तुत विचारों के सारांश निम्नानुसार है;

४।४ आँकसो अल्कोहल, आँकसो विधि द्वारा उत्पादित अल्कोहलों के समुच्च के लिए एक सामान्य नाम है। विभिन्न आँकसो अल्कोहलों के बीच कोई प्रतिस्थापी सम्बन्ध नहीं है। प्रत्येक अल्कोहल एक निश्चित रचना और उपयोग वाला रसायन है और उनकी रचना के हिसाब से उनका विपणन स्थानीय और अन्तर्राष्ट्रीय रूप से किया जाता है। इसे "सामान्य वस्तु" नहीं माना जा सकता है और एव के बदले दूसरे का उपयोग नहीं किया जा सकता है।

४।।४ भारत में बनाए जा रहे आँकसो अल्कोहल निम्नानुसार हैं;

1. सामान्य ब्यूटानोल;
2. आइसो ब्यूटानोल;
3. आइसो डेकानोल;
4. आइसो ऑक्टानोल; और
5. 2-ईथाइल हेक्सानोल;

इस प्रकार यह जाँच केवल स्वदेशी रूप से विनिर्मित आँकसो अल्कोहल के लिए सीमित है और इसलिए याचिका में केवल उक्त आँकसो अल्कोहल को ही शामिल करते हुए उसमें संशोधन और पुनः प्रस्तुत करने की जरूरत है।

४।।।४ याचिका में जाँच अवधि वर्ष 1998-99 के लिए आयात सांख्यिकी काउंला पोर्ट की सूचना पर आधारित है, और ये अधिमाफित नहीं है। आँकसो अल्कोहल के

आयात और निर्यात के आंकड़ों की पुष्टि डीजीसीआई एंड एस से प्राप्त अथवा वहाँ से प्रकाशित के आधार पर अथवा किसी सरकारी एजेंसी से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर करने की जरूरत है जिसमें वस्तु कोड, आयात करने वाले देश, मात्रा और मूल्य दर्शाए गए हों ।

§ 17. याचिका में शामिल देशों में से कुछ देश भारत को आक्सो अल्कोहल का आयात या तो 'शून्य' या नगण्य करते हैं । इन्हें भारत के लिए आक्सो अल्कोहल के प्रतिपादन के मामले में शामिल नहीं किया जा सकता है । इसके अलावा वर्ष 1996-97 से वर्ष 1998-99 के दौरान आयात केवल एन-म्यूटाइल अल्कोहल और 2-इथाइल हेक्सानोल का ही किया गया है जिसके स्वदेशी उत्पादन और मांग के बीच बहुत बड़ा अन्तर है ।

§ 18. जब तक याचिकाकर्ता द्वारा सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के अभिकलन के लिए अपनाई गई प्रक्रिया स्पष्ट नहीं की जाती और रिकार्डों के आधार पर उसे प्रमाणित नहीं किया जाए तब तक इन कीमतों को कथित रूप से पाटन के लिए हिसाब में नहीं लिया जा सकता है ।

§ 19. उत्पादन लागत अनेक कारकों पर निर्भर करती है और सामान्य मूल्य का निर्धारण आक्सो अल्कोहल की अनुमानित उत्पादन-लागत के आधार पर करना सही नहीं है। इसके अलावा, ये मूल्य कच्ची सामग्री रसायनों को तैयार करने और उपयोगिता पर आधारित हैं । भारत और विदेशों में फीड स्टॉक नेप्था, गैस, प्रोपीलिन, हेप्टेन, नोनेन इत्यादि हैं और स्वयं के मानदण्ड फीड स्टॉक, उत्पादन के स्तर,

प्रौद्योगिकी इत्यादि के अनुसार बदल जाते हैं । याचिकाकर्ता द्वारा सामान्य मूल्य के लिए अपनाई गई उत्पादन लागत के निर्धारण का आधार अनुमानित एवं अविश्वसनीय है और यह पाटनरोधी जांच के लिए स्वीकार्य नहीं हो सकता है ।

§ 20. बहुत से विदेशी विनिर्माताओं के पास अपने कैप्टिव कच्ची सामग्री संपन्न हैं और वे प्लास्टिसाइजर्स का भी उत्पादन कर रहे हैं । इस प्रकार कच्चे माल के संपन्न तथा प्लास्टिसाइजर्स के उत्पादन की सुविधा एक ही स्थान पर उपलब्ध होने से उन्हें अधिकतम विफायत का लाभ मिलता है । इन्द्र निशान और एपीएल कच्चे माल के लिए दूसरे एक्कों पर निर्भर हैं और वे विदेशी बाजारों से कम कीमत पर उपलब्ध कच्चे माल का बल्क आयात करने के लिए सक्षम नहीं हैं । इसके अलावा, कच्ची सामग्री चूँकि पेट्रोसायन है, इसलिए वह अत्यधिक स्थिरशील है और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बूझ की कीमतों के साथ-साथ इसकी कीमतों में उतार चढ़ाव बना रहता है ।

§ 21. वर्ष 1998-99 में आक्सो अल्कोहल की अन्तर्राष्ट्रीय कीमतों में अचानक गिरावट प्रोपीलिन की कीमतें कम होने की वजह से आई । वर्ष 1998-99 के

दौरान आँकड़ों अल्कोहल के कम कीमत पर आयात को भारत में पाटन के रूप में नहीं देखा जा सकता है और याचिकाकर्त्ताओं द्वारा व्यनित जाँच अधि उपयुक्त नहीं है ।

(ix) स्थानीय विनिर्माताओं के संयंत्र अलाभकारी, पुराने, अक्षम हैं और विश्व के प्रौद्योगिकी उन्नयन के अनुरूप नहीं हैं तथा वे प्रतिस्पर्द्धा नहीं कर सकते हैं । जब तक कि उनकी क्षमता को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक नहीं बढ़ाया जाता और जब तक वे नवीनतम एवं लागत प्रभावी प्रौद्योगिकी को नहीं अपनाते हैं । तीनों विनिर्माताओं में से किसी का भी उत्पादन अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का नहीं है और मौजूदा एककों को और संरक्षण देने से तब तक कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होगा जब तक वे आधुनिकीकरण का निर्णय नहीं लेते हैं और भारतीय उदारीकृत व्यवस्था में अन्तर्राष्ट्रीय उत्पादन के मापदण्ड को नहीं अपनाते हैं ।

§ ४४ एपीएल के कच्चा माल आपूर्तिकर्त्ता एक्वीसीएल में भंवर आग लग जाने के कारण एपीएल दिनांक 14 सितम्बर, 1997 से 21 मई, 1998 तक बंद रहा । इन्दु निगम वित्तीय और प्रबंधकीय असहयोग सहित कई तरह की समस्याएँ भेल रहा है । वे अपने पूर्ववर्ती उत्पादन स्तर को नियमित रूप से बनाए रखने में भी सक्षम नहीं हैं । नोसिल एक बहुत उत्पाद कंपनी है और उसकी नेप्था ब्रेकर की क्षमता इथलीन के रूप में 60,000 टन है और यह बहुत कम है और अर्थक्षम नहीं है । यह 1968 में स्थापित की गई थी और बार-बार उत्पादन बंद करती रही है । उसके सकल विनिर्माण में एनबीए तथा ईएचए गौण मॉड हैं और इनकी प्राथमिकता न्यूनतम है । उन्हें 3,00,000 टन क्षमता के नेप्था ब्रेकर स्थापित करने के लिए स्वीकृति मिली हुई है और उन्होंने अभी तक कोई ठोस प्रयास नहीं किया है । स्थानीय संयंत्रों की वार्षिक क्षमता बहुत कम है जो 27000 से 30,000 टन के बीच रहती है जबकि इसकी तुलना में विदेशी विनिर्माताओं की स्थापित क्षमता 100,000 टन से अधिक की है ।

§ ४५ प्रमुख विदेशी आँकड़ों अल्कोहल विनिर्माता थैलेट प्लास्टिक्साइजर्स का निर्माण करते हैं और वे प्लास्टिक्साइजर्स का निर्यात करना चाहते हैं क्योंकि आँकड़ों अल्कोहल की अपेक्षा इससे उच्च मूल्य वर्द्धन और अक्षमता प्राप्त होती है । संभवतः पाटनरोधी

याचिका को आगे बढ़ाने में उनकी रुचि नहीं होगी क्योंकि उनके हित पूर्णतः संरक्षित हैं क्योंकि भारत को थैलेट प्लास्टिसाइजर्स का निर्यात करने में उनका बेहतर हित है। ऑक्सो अल्कोहल पर पाटनरोधी शुल्क लगाना ऑक्सो अल्कोहल उद्योग के लिए मददगार साबित नहीं होगा और इससे थैलेट प्लास्टिसाइजर्स के आयात का मार्ग प्रशस्त होगा। अन्ततः इससे भारत में ऑक्सो अल्कोहल और थैलेट प्लास्टिसाइजर्स उद्योग बंद हो जाएगा। इस प्रकार पाटनरोधी शुल्क लगाना न तो ऑक्सो अल्कोहल उत्पादकों के हित में है और न थैलेट प्लास्टिसाइजर्स उद्योग के हित में है।

- (xii) ओक्सो-एल्कोहल का पर्याप्त रूप से संरक्षण रुपए के अवमूल्यन द्वारा और कच्ची सामग्री पर न्यूनतम लेवी द्वारा तथा ओक्सो एल्कोहल के आयात पर 35% की दर से अधिकतम शुल्क और 3.5% की दर से प्रभार लगाया जो कुल मिलाकर 38.5% बैठता है और थाइलेट प्लास्टिसाइजर्स के बराबर 4% की दर से एसएडीडी

लगाकर किया जाता है। चलैय्या और अन्य समितियों की सिफारिशों के आधार पर सरकार द्वारा घोषित और स्वीकार की गई नीतियों के अनुसार ओक्सो-एल्कोहल जैसे मध्यवर्ती सामान पर लगाने वाला आयात शुल्क परिष्कृत थाइलेट प्लास्टिसाइजर्स पर लगाने वाले आयात शुल्क से कम होना चाहिए। यही बात अन्य प्रमुख कच्ची सामग्री अर्थात् थैलिक एन-हाइड्राइड पर लागू होती है। ओक्सो एल्कोहल और थैलिक एन हाइड्राइड को मिलने वाले अनुचित संरक्षण से थाइलेट प्लास्टिसाइजर्स की कीमतों की वृद्धि पर प्रभाव पड़ रहा है जिससे प्लास्टिसाइजर्स का अधिक मात्रा में आयात हो रहा है। इस प्रकार, ओक्सो एल्कोहल को सर्वाधिक संरक्षण का लाभ मिल रहा है और इस पर और अधिक पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने का कोई औचित्य नहीं है।

(xiii) थाइलेट प्लास्टिसाइजर्स का विनिर्माण अनन्य रूप से लघु क्षेत्र के लिए आरक्षित रहता है और अधिकांश इकाईयां लघु उद्योग क्षेत्र में हैं। यह क्षेत्र बड़े पैमाने पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार प्रदान कर रहा है। ओक्सो एल्कोहल के अधिकांश विदेशी विनिर्माता भी प्लास्टिसाइजर्स का उत्पादन कर रहे हैं और प्लास्टिसाइजर्स के स्थानीय विनिर्माता कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना कर रहे हैं क्योंकि मूल्यवर्धित प्लास्टिसाइजर्स का निर्यात लाभकारी होता है और उसे तरजीह दी जाती है। इन परिस्थितियों में ओक्सो एल्कोहल पर पाटनरोधी शुल्क लगाने से ओक्सो एल्कोहल और थाइलेट प्लास्टिसाइजर्स दोनों उद्योगों के बंद हो जाने के कारण लाखों कामगार बेरोजगार हो जाएंगे।

(xiv) उन स्वदेशी विनिर्माताओं को ओक्सो अल्कोहल के आयात के कारण कोई क्षति नहीं होती है जिनके पास स्थानीय मांग पूरी करने के लिए पर्याप्त उत्पादन क्षमता नहीं है। ओक्सो एल्कोहल की कोई नई/अतिरिक्त क्षमता न तो कार्यान्वित की जा रही है न ही अनुमोदित की गई है और भारत में मौजूदा और भावी मांग को पूरा करने के प्रयोजनार्थ उत्पादन के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचने के लिए मौजूदा कोई भी इकाई अपनी प्रौद्योगिकी का उन्नयन और विस्तार करने की इच्छुक नहीं है।

- (xv) पाटन का साक्ष्य तथ्यों के बजाय अनुमानों पर आधारित है और इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता है। इसके अलावा, याचिका में आयातों के जो आंकड़े दिए गए हैं वे सही नहीं हैं, क्षति के बारे में जो साक्ष्य दिए गए हैं वे भी अपुष्ट हैं।
- (xvi) प्लास्टिसाइजर्स के अतिरिक्त रोगन, थिनर, आसंजक के लिए विलायक के रूप में रंगों में कागज और वस्त्र प्रसंस्करण, भेषजीय, ट्यूब तेल, सिंथेटिक लुब्रिकेंट, एक्रीलेट्स, व्यूटाइल एसीटेट, रेजिन, रंजक पदार्थों में रासायनिक मध्यवर्ती उत्पाद इत्यादि के रूप में लगभग 40% ओक्सो एल्कोहल प्रयोग होता है। इन प्रयोक्ताओं के विचारों को आमंत्रित करने की जरूरत है क्योंकि भारत में ओक्सो एल्कोहल के प्रयोक्ताओं और ज्ञात आयातकों की सूची में उपयुक्त किसी भी प्रयोक्ता/एसोसिएशन को शामिल नहीं किया गया है।
- (xvii) दिनांक 22 सितम्बर 99 के हिंदुस्तान टाइम्स के अनुसार ए.पी.एल. ने अप्रैल-अगस्त 1999-2000 के दौरान भारी कारोबार करते हुए 18 करोड़ रुपये का सफल लाभ प्राप्त किया है और उसने 135% की क्षमता उपयोगिता प्राप्त की है।
- (xviii) ओक्सो एल्कोहल के स्वदेशी विनिर्माताओं के पास स्थानीय मांग पूरी करने के लिए पर्याप्त स्टॉक/उत्पादन नहीं है और वे पिछले कुछ महीनों से आपूर्ति करने में खेद प्रकट कर रहे हैं। इसके अलावा, उन्होंने कई बार कीमतों में वृद्धि की है और ए.पी.एल. जल्द ही 2-इथाइल हेक्सानोल की कीमत में

4 रु0 प्रति किग्रा0 तक की वृद्धि करने पर विचार कर रहा है । वर्ष 99 के दौरान आर्डर की स्थिति, की गई आपूर्तियों, स्टॉक स्थिति, आपूर्तियों के लिए खेद और कीमतों के बारे में ब्यौरे एन ओ सी आई एल, ए पी एल और इंदु निसान से मांगे जा सकते हैं । चूंकि स्वदेशी विनिर्माताओं के पास पर्याप्त उत्पादन नहीं हैं और वे स्थानीय कीमतों में वृद्धि कर रहे हैं इसलिए इससे यह प्रमाणित होता है कि भारत में ओक्सो एल्कोहल का कोई पाटन नहीं हुआ है ।

(xix) वर्ष 1998-99 के दौरान आयातित ओक्सो एल्कोहल की कीमतें अन्य देशों में प्रचलित कीमतों के बराबर थीं और भारत में इसका पाटन नहीं हुआ है ।

3.2 निर्यातकों ने प्रश्नावलियों का उत्तर इस प्रकार दिया है: -

मैसर्स अल-जुबैल फर्टीलाइजरा कंपनी, सऊदी अरब ने उल्लेख किया है कि याचिका में उल्लिखित दस उत्पादों में से वे केवल 2-ईएचए का उत्पादन करते हैं जिसका उपयोग मुख्य रूप से डि-ओक्टाइल थाइलेट (डीओपी) के विनिर्माण के लिए किया जाता है । उन्होंने आगे कहा है कि वर्ष 1996-97 और 1997-98 की अवधि के दौरान उनके द्वारा की गई आपूर्ति की मात्रा याचिका में आरोपित मात्रा से काफी कम है । उन्होंने यह भी कहा है कि एक याचिकाकर्ता अर्थात् इन्दु-निसान ज्ञात आयातकों में से एक आयातक अर्थात् इंडो-निप्पोन कैमिकल्स से संबंधित हो सकता है । जहां तक आंध्र पेट्रोकेमिकल्स का संबंध है, उन्होंने कहा है कि वर्ष 1998 में एच पी सी एल रिफाइनरी से कच्ची सामग्री की आपूर्ति में आई गड़बड़ी के कारण संयंत्र बंद हो गया था जिसकी वजह से कंपनी को घाटा हुआ था । यह भी उल्लेख किया

गया है कि भारत में उनकी आपूर्तियां आइसीआईएस-एलओआर प्रकाशनों में उल्लिखित कीमतों से अधिक कीमतों पर की गई हैं। उन्होंने कहा है कि प्रश्नावली के उत्तर के अनुसार उन्हें उपलब्ध की गई सूचना के आधार पर अल-जुबैइल फर्टीलाइजर कंपनी, सऊदी अरब द्वारा भारतीय बाजार में 2-ईएचका कोई पाटन नहीं किया गया है इसलिए उसके खिलाफ पाटनरोधी कार्रवाई समाप्त कर दी जाए।

(ii) मैसर्स एलजी कैमिकल्स लि०, कोरिया ने प्रश्नावली में दिए गए प्रपत्र में उसके द्वारा भारत में आई बी ए, एन बी ए और 2-ई एच ए के किए गए निर्यातों के बारे में सूचना दी है। उन्होंने अपनी घरेलू बिक्री के बारे में भी सूचना भेजी है।

(iii) मैसर्स बीएसएफ लुडविग्शाफेम, जर्मनी और मैसर्स यूनियन कार्बाइड कारपोरेशन, डनबरी, यूएसए ने कहा है कि उन्होंने जांच अवधि के दौरान भारत को ओक्सो एल्कोहल का निर्यात नहीं किया है। मैसर्स पी.टी. पेट्रोविडाडा, इन्डोनेशिया ने कहा है कि वह केवल थाइलिक एनहाईड्राइड और मैलेइक एन हाइड्राइड का विनिर्माता है और जांच की कार्रवाई से उनके नाम को निकाल दिया जाए। मैसर्स कोन्डिया कैमी जीएमबीएच, जर्मनी ने कहा है कि उनकी कंपनी द्वारा याचिका में उल्लिखित किसी भी एल्कोहल का ओक्सो प्रक्रिया के द्वारा उत्पादन नहीं किया जाता है। यद्यपि वे एन-बुटानोल और एन-हेक्सानोल की बिक्री करते हैं तथापि, इन एल्कोहलों का उत्पादन जियग्लर प्रक्रिया द्वारा किया जाता है और इसलिए ओक्सो एल्कोहल नहीं माना जाता है। इसके अलावा, उन्होंने जांच अवधि के दौरान किसी एन-बुटानोल का पोतलदान नहीं किया है और एन हैक्सालोन की थोड़ी सी मात्रा भारत को भेजी थी जो उनकी राय से कोई नुकसान नहीं कर सकती है जैसाकि याचिकाकर्ताओं ने दावा



किया है। तथापि निर्धारित प्रपत्र में उन्होंने कोई सूचना नहीं दी है।

- (iv) मैसर्स ज़ाक, पौलेण्ड ने कहा है कि उन्होंने अपना उत्पाद यूरोपीय संघ से एफओबी रोटरडम आधार पर कंपनी को बेचा था जिसने अपने स्वतंत्र अधिकार से स्वनिर्धारित निर्यात कीमत पर भारतीय क्रेताओं को बेच दिया। अतः ज़ाक, पौलेण्ड पर भारत को अपने उत्पादों का निर्यात करने के मामले में पाटन प्रक्रिया का प्रयोग करने का आरोप लगाने का कोई आधार नहीं है। निर्धारित प्रपत्र में भारत और अन्य देशों को किए गए निर्यातों, घरेलू बिक्री और उत्पादन लागत संबंधी सूचना नहीं दी गई है।

#### घ. उठाए गए मुद्दों की जांच

4. निर्यातकों, आयातकों, याचिकाकर्ता और अन्य हितबद्ध पक्षों द्वारा किए गए उपरोक्त अनुरोधों की उस सीमा तक जहां तक वे नियमों के अनुसार संगत है और इस मामले पर अपना प्रभाव डालते हैं, जांच की गई है और उन पर इन निष्कर्षों में उचित स्थानों पर कार्रवाई की गई है।

#### ड. विचाराधीन उत्पाद

5. वर्तमान जांच में शामिल उत्पाद एसीलिक एल्कोहल और उनके हेलोजिनेटेड, सल्फोनेटेड, नोइट्रेटेड अथवा नाइट्रोसेटेड व्युत्पत्तियां हैं (दिनांक 29.7.99 की जांच शुरुआत संबंधी सूचना सं० 15(1)/99-डीजीएडी) में यथा निर्दिष्ट) इन्हें वाणिज्यिक एवं तकनीकी शब्दावली में ओक्सो-एल्कोहल के नाम से जाना

## जाता है और इन्हें भारत के सीमाशुल्क टैरिफ के सीमाशुल्क

उप-शीर्ष सं० 2905 के तहत परिभाषित किया गया है। तथापि, यह वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और यह वर्तमान जांच के दायरे पर बाध्यकारी नहीं है।

जांच के दायरे के लिए जांच की शुरुआत संबंधी उपरोक्त सूचना में ओक्सो-एल्कोहल के निम्नलिखित रूपों को सूचीबद्ध किया गया था:-

2-इथाइल हेक्सानोल (जो 2-ईएचए के रूप में भी जाना जाता है)

नार्मल बुटानोल (जो एनबीए के रूप में भी जाना जाता है)

आइसो बुटानोल (जो आईबीए के रूप में भी जाना जाता है)

आईसो ओक्टेनोल

आइसो डेकानोल

नार्मल हेक्सानोल

हेप्टानोल (आइसो हेप्टानोल एवं नार्मल हेप्टानोल)

नोनानोल (आइसो नोनानोल एवं नार्मल नोनानोल)

ड्राई डेकानोल

2 प्रोफी हेप्टानोल

याचिकाकर्ताओं ने आरोप लगाया है कि एल्कोहलों की इन किस्मों के बीच एक दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त होने की काफी गुंजाइश है। तथापि जैसाकि ऊपर कहा गया है आयातकों ने अनुरोध किया है कि भारत में विनिर्मित होने वाले ओक्सो एल्कोहल केवल नार्मल बुटानोल, आइसो बुटानोल, आइसो डेकानोल, आइसो ओक्टापोल और 2-इथाइल हेक्सानोल है। तथापि, यह देखा गया है कि उपरोक्त ओक्सा एल्कोहल की इन

किस्मों से भिन्न नार्मल हेक्सानोल का भी भारत में आयात किया जा रहा है। इसलिए, यह निर्णय लिया गया है कि जांच केवल नार्मल बुटानोल, आइसो बुटानोल, आइसो डेकानोल, आइसो ओक्टानोल, 2-इथाईल हेक्सानोल एवं नार्मल हेक्सानोल तक सीमित रखी जाए।

इस संदर्भ में प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि केवल आइसो बुटानोल, नार्मल बुटानोल और 2-इथाईल हेक्सानोल के मामले में ही सामान्य मूल्य, निवल निर्यात कीमत, क्षति जांच के अन्य पहलुओं के बारे में विशिष्ट सूचना उपलब्ध है। तथापि, अन्य ओक्सो एल्कोहल अर्थात् आइसो डेकानोल/आइसो ओक्शनोल और नार्मल हेक्सानोल को 2 इथाईल हेक्सानोल की निकटतम एवजी पा गया है। अतः यह निर्णय लिया गया है कि 2 ईएचए हेतु लिए गए परिकलन एवं सूचना का उपयोग इन ओक्सो एल्कोहलों के और उन एल्कोहलों के लिए किया जाए जिनका उत्पादन या तो स्वदेश में किया जा रहा है अथवा जिनका आयात किया जा रहा है।

## च. समान वस्तुएं

6. याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि उनके उत्पाद और उक्त देशों से आयातित उत्पाद में कोई खास भिन्नताएं नहीं हैं जिसका कीमत और गुणवत्ता पर प्रभाव पड़ सकता है। ये दोनों सामान के भौतिक एवं रासायनिक गुणों (आकार, रासायनिक संरचना), विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी, कार्यों एवं उपयोगों, उत्पाद विनिर्देशनों, वितरण और विपणन एवं टैरिफ वर्गीकरण के हिसाब से तुलनीय है। इन दोनों का तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से एक दूसरे के स्थान पर उपयोग किया जा सकता है।

आयातक आयातित तथा घरेलू ऑक्सी अल्कोहल का उपयोग एक दूसरे के स्थान पर कर रहे हैं। इसलिए, पाटनरोधी नियम के अर्थों के दायरे में ये दोनों समान वस्तुएँ हैं। इस संबंध में प्राधिकारी ने यह देखा है कि यद्यपि कुछ आयातकों ने याचिकाकर्त्ता के उत्पाद की तुलना में इस उत्पाद में प्रसंस्करण तथा गुणवत्ता में अन्तर होने का दावा किया है, तथापि, इन अन्तरों का दोनों उत्पादों की समानता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, क्योंकि उपभोक्ता द्वारा दोनों का इस्तेमाल पारस्परिक रूप से एक दूसरे के स्थान पर किया जा रहा है। प्राधिकारी ने पाया है कि दोनों के अन्तिम उपयोग एक समान हैं तथा दोनों के समान मौलिक तकनीकी लक्षण हैं।

#### छ० घरेलू उद्योग:

7० यह याचिका इन्दु निस्सान ऑक्सी केमिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड, मुम्बई, नेशनल ऑर्गेनिक केमिकल इंडस्ट्रीज लि०, मुम्बई तथा आंध्रा पेट्रो केमिकल्स लि०, हैदराबाद की ओर से ऑक्सी अल्कोहल उद्योग संघ द्वारा दायर की गई है। कुल घरेलू उत्पादन में याचिकाकर्त्ताओं का एक बहुत बड़ा हिस्सा है। इसलिए याचिकाकर्त्ता नियमों के अर्थ के भीतर वर्तमान याचिका दायर करने की हेतुस्थित रखते हैं तथा वे घरेलू उद्योग हैं।

एक निर्यातक द्वारा यह आरोप लगाया गया है कि इन्दु निस्सान ऑक्सी केमिकल इंडस्ट्रीज, इंडो निप्पो केमिकल कं० लि० से संबंधित जोकि ऑक्सी अल्कोहल का आयातक है। इंडो निप्पो केमिकल कं० ने इस मामले में एक आयातक के रूप में निवेदन किया है और वह इस याचिका का विरोध कर रही है। यह भी निवेदन किया गया है कि इन दोनों कम्पनियों के बीच गंभीर विवाद हैं और कोई भी एक दूसरे के प्रचालन-कार्यों में किसी प्रकार के नियंत्रण का प्रयोग नहीं करता है। इसलिए यह निर्णय लिया गया है कि दोनों कम्पनियों को संबद्ध कम्पनियां नहीं माना जाए।

#### ज० शामिल देश:

8० जैसा कि उपर पैरा 2४४ में उल्लेख किया गया है, याचिकाकर्त्ता ने यूरोपीय संघ के खिलाफ समग्र रूप से तथा अन्य देशों, अर्थात् पोलेंड, इरान, सऊदी अरब,

दक्षिण कोरिया, इटोनेशिया, संयुक्त राज्य अमेरिका एवं रूस के साथ-साथ पृथक रूप से जर्मनी, स्वीडन तथा नीदरलैंड के खिलाफ भी पाटनरोधी जांच शुरू करने की मांग की है। तथापि, अन्य देशों के खिलाफ जांच की शुरुआत करने का याचिकाकर्ता का अनुरोध स्वीकार कर लिया गया, परन्तु यूरोपीय संघ के संबंध में यह निर्णय लिया गया कि चूंकि जर्मनी, स्वीडन तथा नीदरलैंड यूरोपीय संघ के तहत इसके सीमाशुल्क संघ का एक हिस्सा है, इसलिए यूरोपीय संघ के खिलाफ जांच शुरू करना ही पर्याप्त है और जर्मनी, स्वीडन तथा नीदरलैंड के खिलाफ पृथक रूप से जांच की शुरुआत करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

**8. शासन तथा प्राधिकारी द्वारा सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत संबंधी दावों की जांच:**

9. किसी वस्तु के लिए सामान्य मूल्य का धारा 9(1) § 1 ग 1 के अंतर्गत अर्थ है:-

§ 1 § सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तुओं के लिए उप-धारा § 5 के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित तुलनात्मक मूल्य, जबकि ऐसी वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में उपभोग के लिए आश्रित हो, या

§ 1 § 1 अहां निर्यातक देश या क्षेत्र के स्वदेशी बाजार में सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तु की कोई बिक्री नहीं हो या विशेष बाजार दशा के कारण अथवा निर्यातक देश या क्षेत्र के स्वदेशी बाजार में बिक्रियों की कम मात्रा के कारण ऐसी बिक्रियों की वजह से संप्रचित तुलना नहीं हो सकती हो, तो सामान्य मूल्य या तो:-

§ क § निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से आयात किये जाने पर समान वस्तु का उपधारा § 6 के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य; या

(ख) उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित, प्रशासनिक बिक्री और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित वृद्धि के साथ वस्तु-मूल के देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागत :-

वर्तते कि वस्तु का आयात जब मूलता के देश से भिन्न अन्य किसी देश से किया गया हो तथा जहाँ वस्तु निर्यात के देश से केवल गुजरी हो या ऐसी वस्तु निर्यात के देश में उत्पादित नहीं होती हो या निर्यात के देश में उसका कोई तुलनात्मक मूल्य नहीं हो, तो इसके सामान्य मूल्य का निर्धारण, मूलता के देश में इसके मूल्य के संदर्भ में किया जाएगा ।

प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के निर्यातकों को प्रश्नावलियाँ भेजी। सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत के संबंध में निर्यातकों द्वारा किया गया दावा निम्न प्रकार है:

कोरिया गणराज्य:- प्राधिकारी द्वारा मांगी गई सूचनाओं

निम्नलिखित

हैं:

- \* घरेलू बाजार में की गई बिक्री का साँदे-वार ब्यौरा;
- \* घरेलू बाजार में बिक्री, भारत को निर्यात तथा भारत के अलावा अन्य देशों को निर्यात के लिए उत्पादन लागत;
- \* उन कीमतों का साक्ष्य, जिन कीमतों पर वस्तुओं को घरेलू बाजार में बेचा जा रहा है ।

प्राधिकारी ने यह पाया है कि ट्रैकि निर्यातक ने उत्पादन लागत संबंधी ब्यौरे प्रस्तुत नहीं किए हैं इसलिए यह नहीं कहा जा सकता है कि घरेलू बाजार में की गई सभी बिक्री के मामलों में उत्पादन लागत की वसूली हुई थी । इसलिए घरेलू बाजार में की गई बिक्री के मामले में यह दावा नहीं किया जा सकता है कि उक्त बिक्री सामान्य व्यापार के दौरान की गई है । इसलिए प्रारम्भिक निष्कर्षों के प्रयोजन से प्राधिकारी, निर्यातक द्वारा दावा किए गए सामान्य मूल्य की उपेक्षा करते हुए याचिकाकर्त्ताओं द्वारा दावा किए गए सामान्य मूल्य को स्वीकार करते हैं । याचिकाकर्त्ताओं द्वारा किया गया सामान्य मूल्य का दावा कारखाना-द्वार स्तर का है और इसलिए इसमें किसी प्रकार के अन्य मूल्य समायोजनों की आवश्यकता नहीं है ।

निर्यात कीमत के संबंध में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन मै० एल०जी० कैमिकल्स लि० के द्वारा किया गया है जबकि वस्तुओं का भारत के लिए बिक्री मै० एल०जी० इंटरनेशनल कॉर्पोरेशन द्वारा तैयार

किया गया है। तथापि, कम्पनी ने वह मूल्य प्रकट नहीं किया है जिस पर अन्ततः भारत को निर्यात करने के लिए वस्तुओं की बिक्री मै० एल०जी० केमिकल्स लि० द्वारा मै० एल०जी० इंटरनेशनल कॉर्पोरेशन को की गई। इसलिए, यह कहा जा सकता है कि मै० एल०जी० केमिकल्स लि० द्वारा वस्तुओं की आपूर्ति मै० एल०जी० इंटरनेशनल कॉर्पोरेशन को उस मूल्य से कम मूल्य पर की गई है, जिस पर वस्तुओं का निर्यात भारत को किया गया और दोनों मूल्यों का यह अन्तर मै० एल०जी० इंटरनेशनल कॉर्पोरेशन द्वारा भारत को वस्तुओं के निर्यात में उठाए गए खर्चों की वसूली की अनुमति देता है। वास्तव में, मै० एल०जी० इंटरनेशनल कॉर्पोरेशन द्वारा भारत के निर्यात पर हुए खर्चों का कोई ब्यौरा प्रकट किया गया नहीं लगता है। इसके अलावा निर्यातक ने ब्याज खर्चों के कारण किसी मूल्य समायोजन को नहीं दर्शाया है, हालांकि कम्पनी द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्ष्यों से यह पता चलता है कि वस्तुओं की बिक्री शुण आधार पर की गई तथा मानी गयी निर्यात कीमत में शुण कीमत शामिल है। तथापि प्राधिकारी ने प्रारंभिक निष्कर्षों के उद्देश्य से विस्तृत जांच किए जाने तक कम्पनी द्वारा दावा की गई सीआईएफ निर्यात कीमत को ही मान लिया है। जब तक आगे की जांच नहीं हो जाती तब तक प्राधिकारी ने ब्याज के कारण भी कोई समायोजन नहीं किया है। निर्यातक ने निर्यात कीमत के लिए अन्य कीमत समायोजनों का दावा किया है, जो बीमा, भंडारण एवं समुद्री माल-भाड़े हैं। प्राधिकारी ने आगे की जांच किए जाने तक उपरोक्त कीमत समायोजनों पर विचार किया तथा इसकी अनुमति दे दी।

### सुदी अरब:

मै० अल-जुबेल फटीलाइजर्स कम्पनी १एस०ए०एम०ए०डी० ने अपने जवाब में भारत को की गई निर्यात-बिक्री का सौदे-दार ब्यौरा, तीसरे देशों को किए गए कुछ निर्यातों के बारे में ब्यौरा, भारत तथा अन्य देशों को की गई निर्यात बिक्री की करखाना-द्वार स्तर पर लागू, जांच अर्द्ध तथा जांच अर्द्ध के पहले के वर्षों के लिए आय विवरण-पत्र एवं अन्य ब्यौरे प्रस्तुत किए हैं। यह कहा गया है कि सुदी अरब में आक्सो अलकोहल की कोई घरेलू बिक्री नहीं है।

निर्यातक द्वारा दी गई सूचना से यह प्रतीत होता है कि मै० एल०ए०एम०ए०डी० द्वारा उत्पादित वस्तुओं का निर्यात मै० सुदी बोसक इंडस्ट्रीज कॉर्पोरेशन

॥ एस० ए० बी० आर्इ० सी० ॥ के जरिए किया गया है, जिसे अन्ततः इसे अपनी संबद्ध कंपनी मै० एस० ए० बी० आर्इ० सी० इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के जरिए बेचा है। जिस कीमत पर मै० एस० ए० एम० ए० डी० ने अपना माल मै० एस० ए० बी० आर्इ० सी० को बेचा है, वह कीमत नहीं बतलाई गई है। मार्केटिंग कम्पनियों द्वारा वहन किए गए खर्च अथवा उन्हें किए गए भुगतान के बारे में किसी प्रकार के समायोजन का ब्यौरा भी नहीं दिया गया है। सी० आर्इ० एफ० निर्यात कीमतों से किया गया एक मात्र समायोजन समुद्री माल-भाड़ा तथा समुद्री-बीमा का है। अन्तिम निर्धारण होने तक प्राधिकारी प्रारम्भिक चरण में सत्यापन के अधीन इन निवेदनों को स्वीकार करते हैं।

घरेलू बिक्री के अभाव में, प्राधिकारी के पास सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए तीसरे देशों को किए गए निर्मित अथवा उत्पादन लागत के ही विकल्प उपलब्ध हैं। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि निर्यातकों ने संबद्ध वस्तुओं के अन्य देशों को किए गए देश-वार निर्यात के बारे में सूचना उपलब्ध नहीं कराई है। सूचना केवल भारत से भिन्न एक देश को किए गए निर्यातों के बारे में ही उपलब्ध कराई है, जहां निर्यात उन कीमतों से कम कीमत पर किए जा रहे हैं जिन पर भारत को निर्यात किए गए हैं। इस सूचना का सामान्य मूल्य निकालने के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है क्योंकि साक्ष्य से स्पष्ट तौर पर यह पता चलता है कि उक्त निर्यात जांच अवधि के दौरान ऐसी कीमतों पर किए गए हैं, जिसे उत्पादन लागत पूरी नहीं होती है।

निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत किए गए लागत संबंधी ब्यौरों के साथ दस्तावेजी साक्ष्य संलग्न नहीं किए गए हैं और वे पूरे भी नहीं हैं। "विनिर्माताओं के ऊपरी छवें" और "ब्याज लागत" शीर्षों के सामने कोई लागत नहीं दर्शाई गई है। इकाई लागत निकालते समय किसी निश्चित लागत को भी हिसाब में



नहीं लिया गया है। कच्ची सामग्री की असामान्य रूप से कम कीमतों के बारे में कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है, जिन्हें आयातकों द्वारा भी जांच अवधि के दौरान प्रचलित अन्तर्राष्ट्रीय कीमतों से काफी कम बताया गया है। प्रस्तुत किए गए लागत संबंधी आंकड़े अधूरे हैं और इसलिए प्राधिकारी का विचार है कि प्रारम्भिक निष्कर्षों के प्रयोजनार्थ निर्यातकों द्वारा दावा किए गए सामान्य मूल्य की अनदेखी कर दी जाए और वह अंतिम निर्धारण होने तक याचिकाकर्त्ताओं द्वारा दावा किए गए सामान्य मूल्य को स्वीकार करते हैं।

अन्य देश:- निर्यातकों द्वारा निर्धारित प्रश्न में प्रस्तुत की जाने वाली यथा अपेक्षित सूचना शेष संलग्न देशों अर्थात् ईरान, पोलैंड, इंडोनेशिया, रूस, यूएसए, और यूरोपीय संघ के किसी भी निर्यातक से प्राप्त नहीं हुई है।—चूंकि उक्त निर्यातकों अथवा अन्य हितवद्ध पक्षों द्वारा इन देशों में सामान्य मूल्य के बारे में कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की गई है इसलिए प्राधिकारी ने इन देशों में सामान्य मूल्य निकालने के प्रयोजनार्थ याचिकाकर्त्ताओं द्वारा उपलब्ध करवाई गई सूचना पर विचार किया है। जहां तक निर्यात कीमत का संबंध है, आवश्यक समायोजन करने के पश्चात् कारखाना स्तर पर निर्यात कीमत निकालने के लिए डी0जी0सी0आई0 एण्ड एस0 से उपलब्ध हुई सूचना और आयातकों द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना का इस्तेमाल किया गया है।

नए निर्यातक :- कुछ निर्यातकों विनिर्माताओं ने दावा किया है कि उन्होंने जांच अवधि के दौरान भारत को निर्यात नहीं किया है।

ये निर्यातक जैसे ही भारत को निर्यात करते हैं, जैसे ही उन्हें ऊपर वर्णित पाटनरोही नियमों के नियम 22 के अंतर्गत नये निर्यातक के रूप में पुनर्विचार हेतु आवेदन करने की अनुमति देने की परम्परा रही है ।

#### 10. पाटन मार्जिन

उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना के आधार पर प्राधिकारी ने विधाराहीन उत्पाद के लिए संबद्ध देशों के मामले में पाटन मार्जिन प्रतिशत के रूप में निर्यात कीमत व समायोजन के बाद ४ के रूप में निम्नानुसार निकाला है :-

देश	एन वी ए	आई वी ए	2 ई एच ए
पोलैण्ड	69.82		56.65
दक्षिण कोरिया	106.73	140.19	109.05
रूस	102.73	36.26	
ईरान	107.85	130.1	
यू एस ए	50.67	77.85	69.79
यूरोपियन संघ	62.56	130.77	45.5
इण्डोनेशिया		164.03	104.23
सऊदी अरब			95

मै0 एल जी कैमिक्स के संबंध में यथा निर्धारित पाटन मार्जिन का प्रयोग समग्र रूप से दक्षिण कोरिया के लिए किया गया । मै0 अल्जुल पर्टिलाइज्ड ४०. सुतामाद जो मै0 मज्दी बेसिक इण्डस्ट्रीज कारपोरेशन सिंगैपूर की सहायक कंपनी है, के लिए निर्धारित पाटन मार्जिन भी सऊदी अरब से भारत को हुए सभी आयातों पर भी लागू होता है । जहां कहीं डी जी सी आई एण्ड एस के आकड़ों में किसी एक विशेष देश से भारत को आयात अल्कोहल के किसी विशेष स्वरूप के किसी आयात का होना प्रदर्शित नहीं होता है । वहां उक्त विशेष संबद्ध देश से आयात अल्कोहल के उक्त विशेष स्वरूप के लिए पाटन मार्जिन में संबंधित आयात को खाली छोड़ दिया गया है ।

## ४५४ क्षति

॥०. उपरोक्त नियम ॥ परिशिष्ट ॥ के अधीन जब क्षति के किसी निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है तो इस प्रकार के निष्कर्षों में "सभी संलग्न तथ्यों जिन्में पाटित आयातों की मात्रा स्वदेशी बाजार में समान वस्तुओं की कीमतों पर उनका प्रभाव और इस प्रकार की वस्तुओं के स्वदेशी उत्पादकों पर इस प्रकार के आयातों का परिणामी प्रभाव शामिल है, को ध्यान में रखते हुए" स्वदेशी उद्योग को हुई क्षति का निर्धारण शामिल होगा। कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय इस बात की जाँच करना आवश्यक समझा जाता है कि क्या भारत में समान वस्तुओं की कीमत की तुलना में पाटित आयातों के कारण कीमतों में अत्यधिक कटौती हुई है या क्या इस प्रकार के आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा पर्याप्त गिरावट आई है या कीमत में होने वाली उस वृद्धि में स्कावट आई है अन्यथा पर्याप्त स्तर तक हुई होती।

उपरोक्त नियम ॥ के अन्तर्गत अनुसूच ॥ ४११११ में आगे यह व्यवस्था है कि "जिन मामलों में एक से अधिक देशों से किसी उत्पाद के आयातों की साथ-साथ पाटनरोधी जाँच की जा रही है, उन मामलों में केवल उस स्थिति में निर्दिष्ट प्राधिकारी ऐसे आयातों के प्रभाव का संक्षिप्त आकलन करेगा जहाँ वह यह निर्धारित करता है कि प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में पुष्टीकृत पाटन मार्जिन निर्यात कीमत के ४ के रूप में उल्लिखित २४ से अधिक बैठता है और प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा समान वस्तु के आयातों का ३४ बैठती है अथवा जहाँ असंग-असंग देशों का निर्यात ३४ से कम बैठता है, आयातों का संक्षिप्त हिस्सा समान वस्तु के आयातों के ७४ से अधिक बनता है और आयातित वस्तु और समान घरेलू वस्तुओं के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों को देखते हुए आयातों के प्रभाव का संक्षिप्त आकलन उचित ठहरता है।

प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पाटन मार्जिन और संलग्न देश से हुए आयातों की मात्रा उपरोक्त निर्धारित सीमाओं से अधिक है। आयातों के प्रभावों का

सकयी वाक्कन उचित है क्योंकि सब्द देशों से हुए निर्यात की कीमत भारतीय बाजार में धरेल उद्योग द्वारा प्रस्तुत की गई कीमतों के साथ सीधी प्रतिस्पर्धा कर रही थी ।

भारत में धरेल उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने उपरोक्त नियमों के अनुसार ॥ ११८॥ के अनुसार आगे उन संकेतकों पर विचार किया है जो उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालते हैं । जैसे कि उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिछी मात्रा, लाभप्रदता, निम्न बिछी प्राप्ति, पाटन की मात्रा और उसका मार्जिन इत्यादि ।

### आयातों की मात्रा

प्राधिकारी ने इस संबंध में याचिकाकर्ता के आंकड़ों और डी जी सी आर्ब एस कलकत्ता द्वारा प्रकाशित आंकड़ों पर विचार किया है और वह यह पाते हैं कि इन दोनों के बीच मामूली अंतर है । तथापि प्राधिकारी ने सब्द देशों से हुए आयातों के स्तान और इस वजह से धरेल उद्योग को हर्ष क्षति का विश्लेषण करने के लिए आयात की मात्रा से संबंधित उन आंकड़ों पर भरोसा किया है । जो डी जी सी आर्ब एस कलकत्ता, जो कि एक सरकारी निकाय है , द्वारा प्रकाशित किए गए हैं ।

डी जी सी आर्ब एस द्वारा प्रकाशित आंकड़ों और निर्यातकों द्वारा किए गए अनुरोधों के अनुसार १९९८-९९ के दौरान विभिन्न देशों से हुए आक्सो एल्कोहल के आयातों की मात्रा निम्नानुसार है:-

देश	आयात (मी. टन में)
पोलैंड	1188
दक्षिण कोरिया	8274
इटली	1194
सऊदी अरब	2010
रूस	2428
ईरान	2271
यू एस ए	4454
यूरोपीय संघ	8251
कुल	30070

प्रत्येक संबद्ध देश से हुए आयातों की मात्रा न्यूनतम सीमा से अधिक है ।

आयातों के प्रभावों का सख्ती आकलन उचित है क्योंकि संबद्ध देशों से हुए निर्यात की कीमतें भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत की गई कीमतों के साथ सीधे प्रतिस्पर्धा करती हैं । किसी भी हितकण्ड पक्ष ने सख्ती आकलन के बारे में भी कोई आपत्ति नहीं उठाई है । इसलिए प्राधिकारी ने सभी संबद्ध देशों से घरेलू उद्योग को हुई हानि का सख्ती आकलन किया है ।

### संबद्ध देशों से हुए आयातों का स्तान

संबद्ध देशों से हुए आक्सो अल्कोहल के आयातों में सम्पूर्णतः पर्याप्त वृद्धि हुई है जैसा कि नीचे दी गई तालिका से देखा जा सकता है ।

वर्ष	आयात (मी. टन में)	1995-96 की तुलना में % वृद्धि
1995-96	7007	-
1996-97	19774	182
1997-98	22382	219
1998-99	30070	329

प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि संबद्ध देशों से हुए आक्सो अल्कोहल के आयातों में सम्पूर्णतः पर्याप्त वृद्धि हुई है ।

### बाजार हिस्सा

आक्सो अल्कोहल के कुल आयातों में संबद्ध देशों से हुए आयातों का हिस्सा निम्नानुसार रखा था:-

वर्ष	कुल आयात	संबद्ध देशों से हुए आयात	आयातों में संबद्ध देशों का बाजार हिस्सा
1995-96	11524	7007	60.81
1996-97	25980	19774	76.11
1997-98	24543	22383	91.20
1998-99	33451	30070	89.98

( आयात कि. ग्रा. में )

प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि भारत में वाक्सी डुल्कोहल के हुए कुल आयातों में संयुक्त देशों से हुए आयातों के हिस्से में पर्याप्त वृद्धि हुई है। इन देशों से हुए आयातों में पर्याप्त वृद्धि के कारण उनके बाजार हिस्से में अत्यधिक वृद्धि हुई है जैसा कि नीचे दिये गई तालिका से देखा जा सकता है। प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है।

कुल मांग में % बाजार हिस्सा

वर्ष	संयुक्त देश	अन्य देश	घरेलू उद्योग
1995-96	11.58	7.46	80.96
1996-97	25.28	7.93	66.78
1997-98	30.61	2.95	66.44
1998-99	37.73	4.19	58.08

निर्यात कीमत

1995-96 से औसत आयात कीमते निम्नानुसार रही हैं :

वर्ष	दर प्रति मी. टन
1995-96	29043
1996-97	24960
1997-98	25887
1998-99	18567

प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इन वर्षों में आयात कीमत में पर्याप्त गिरावट आई है।

**पिछले तीन वर्षों के संबन्ध में घरेलू उद्योग के आर्थिक मापदण्डों का सारांश**

मात्रा §मी. टन में§

मूल्य § लाख रुपये में§

	1996-97		1997-98		1998-99	
उद्योग §समग्र रूप में§	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य
स्थापित क्षमता	87000	-	87000	-	87000	-
उत्पादन	60705	-	53654	-	44092	-
बिक्रीया स्वदेसी	52237	20907	48634	17602	46351	13589
क्षमता उपयोग	69.78	-	61.67	-	50.68	-
लाभ §घाटा§	-	147	-	§2382§	-	§5077§

**§ट§. क्षति के संबन्ध में निष्कर्ष**

12. पूर्वोक्त के आधार पर घरेलू उद्योग द्वारा क्षति के संबन्ध में किए गए निम्नलिखित दावों की पुष्टि की जाती है :

**§क§** संबन्ध देशों से हुए आयातों में सम्पूर्ण रूप से पर्याप्त वृद्धि हुई है ।

(ख) भारत में ओक्सो एलकोहल्स के कुल आयातों के संबंध में संबन्ध देशों से हुए आयातों में वृद्धि हुई है ;

(ग) भारत में ओक्सो एलकोहल की मांग के संबंध में संबन्ध देशों से हुए आयातों में वृद्धि हुई है । प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में, घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है ;

(घ) घरेलू उद्योग के ओक्सो एलकोहल के उत्पादन में गिरावट आई है ;

- (ड.) घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में गिरावट आई है;
- (च) घरेलू उद्योग की बिक्री की संपूर्ण मात्रा एवं मूल्य में गिरावट आई है ;
- (छ) घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में तेजी से गिरावट आई है ;
- (ज) आयातों से घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में पर्याप्त कटौती हुई है ;
- (झ) घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में भारी कमी आई है ।

इसलिए, प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है ।

### (ठ) कुछ सामान्य मुद्दे

13. कुछ हितबद्ध पार्टियों ने दावा किया है कि ओक्सो एलकोहल के विनिर्माताओं को भारत सरकार द्वारा अनेक वर्षों से संरक्षण प्रदान किया जा रहा है क्योंकि उनकी कच्ची सामग्री पर बहुत कम दर से शुल्क लगाया जाता है जबकि ओक्सो एलकोहल पर और डी.ओ.पी. पर शुल्क की दर काफी अधिक है । इस संदर्भ में यह उल्लेख किया गया है कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति का आकलन करते समय प्राधिकारी शुल्कों के वास्तविक स्तर पर विचार करते हैं जिससे यह बात भी प्रमाणित होती है कि घरेलू उद्योग को क्षति हुई है ।

यह भी तर्क दिया गया है कि घरेलू उत्पादन और मांग के बीच बड़ा अंतर है जिसे आयातों द्वारा पूरा किया जाना होता है । इसलिए, आयातों पर शुल्कों का लगाया जाना अपेक्षित नहीं है । इस संदर्भ में यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग के लिए समूची मांग को पूरा करने की स्थिति में होने की जरूरत नहीं है ताकि वह पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के लिए आवेदन करने का पात्र बन सके क्योंकि पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य अनुचित व्यापार प्रक्रिया की रोकथाम करना



यह भी उल्लेख किया गया है कि याचिकाकर्त्ताओं ने सामान्य मूल्य के बारे में स्पष्ट सूचना प्रस्तुत नहीं की है जिसके लिए उत्पादन की आकलित लागत का प्रयोग किया गया है जोकि एक अवास्तविक आंकड़ा है और इसे पाटनरोधी जांच के प्रयोजनार्थ स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए। इस संदर्भ में प्राधिकारी ने खासतौर पर सामान्य मूल्य के संबंध में सूचना उपलब्ध कराने के लिए संबद्ध देशों के निर्यातकों को पर्याप्त अवसर प्रदान किया है। लेकिन किसी भी निर्यातक ने अपेक्षित सूचना प्रस्तुत नहीं है।

यह बताया गया है कि समाचार पत्रों में छपी खबरों के अनुसार अप्रैल-अगस्त, 2000 के दौरान आंध्र पेट्रोकेमिकल लि० ने भारी कारोबार करते हुए 18 करोड़ रु० का सकल मुनाफा कमाया है और उसका क्षमता उपयोग 135 % रहा है। ए.पी.एल. ने अपने उत्तर में बताया है कि समाचार पत्रों में छपी उक्त खबर दुर्भावनापूर्ण है और कंपनी द्वारा उसका खंडन किया गया है जिसे समाचार पत्रों में भी प्रकाशित किया गया है।

यह भी तर्क दिया गया है कि इस याचिका को इण्डियन पेंट्स एसोशिएशन, इण्डियन केमिकल मैनुफैक्चरर्स, कागज एवं वस्त्र प्रसंस्करण, भेषजीय, रासायनिक सहायक सामग्री, प्लास्टिक, रंजक पदार्थ इत्यादि से जुड़ी एसोशिएशनों की जानकारी में लाया जाना चाहिए। किसी हितबद्ध पार्टी द्वारा सार्वजनिक अधिसूचना का संज्ञान लिया गया होना चाहिए और प्राधिकारी को उसके द्वारा उत्तर दिया गया होना चाहिए। चूंकि अन्य हितबद्ध पार्टियों ने भाग न लेना पसंद किया है इसलिए, प्राधिकारी ने वर्तमान जांच की कार्रवाई जारी रखी है।

### ड. कारणात्मक संबंध

14. इस बात को प्रमाणित करने के लिए कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति संबद्ध देशों से हुए आयातों के कारण पहुंची है प्राधिकारी यह अवधारित करते हैं कि संबद्ध देशों से हुए आयातों की मात्रा में वृद्धि के परिणामस्वरूप याचिकाकर्ता के बाजार हिस्से में गिरावट आई है। इसका प्रभाव घरेलू उत्पाद की कीमतों में कटौती के रूप में पड़ा है जिससे घरेलू उद्योग अपनी उचित बिक्री कीमत से कम कीमत पर बिक्री करने के लिए बाध्य हुआ था। परिणामतः घरेलू उद्योग अपनी उचित बिक्री कीमत प्राप्त करने की स्थिति में नहीं था और इसलिए उसे घाटा हुआ। अतः घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति संबद्ध देशों से हुए पाटित आयातों के कारण पहुंची थी।

### ढ. भारतीय उद्योग के हित और अन्य मुद्दे

15. सामान्यतः पाटनरोधी शुल्कों का उद्देश्य पाटन को हटाना है जो स्वदेशी उद्योग को क्षति पहुँचा रहा है तथा भारतीय बाजार में एक खुली और उपर्युक्त प्रतिस्पर्धा को पुनः स्थापित करना है जो देश के सामान्य हित में हो।
16. यह माना जाता है कि पाटनरोधी शुल्कों को लगाया जाना संबद्ध वस्तुओं का प्रयोग करते हुए निर्मित उत्पादों के बिक्री स्तर को प्रभावित करेगा और परिणामस्वरूप इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धा पर कुछ प्रभाव होगा तथापि भारतीय बाजार पर उचित प्रतिस्पर्धा पाटन रोधी उपायों द्वारा कम नहीं होगी विशेष रूप से यदि पाटन रोधी शुल्क का लगाया जाना

उस राशि तक सीमित रहता है जो स्वदेशी उद्योग की क्षति को हटाने के लिए आवश्यक है। इसके विपरीत पाटन रोधी उपायों के लगाए जाने से पाटन प्रक्रिया द्वारा प्राप्त किए गए अनुचित लाभों को समाप्त किया जा सकेगा और ये स्वदेशी उद्योग की गिरावट को रोकेंगे तथा ओक्सो एल्कोहल के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प की उपलब्धता को बनाये रखने में मदद करेंगे। पाटन रोधी उपायों के लगाए जाने से किसी भी प्रकार से संबद्ध देशों से आयात प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए इसका उपभोक्ताओं के उत्पाद की उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं होगा।

17. स्वदेशी उद्योग की क्षति को हटाने के लिए आवश्यक पाटन रोधी शुल्क की सीमा को सुनिश्चित करने के लिए प्राधिकारी ने स्वदेशी उद्योग के लिए क्षमता उपयोग के इष्टतम स्तर पर उत्पादन की इष्टतम लागत पर विचार करते हुए स्वदेशी उद्योग हेतु भारत में ओक्सो एल्कोहल की उपयुक्त बिक्री कीमत पर भरोसा किया है।

#### निष्कर्ष

18. पूर्वोक्त पर विचार करने के बाद प्राधिकारी ये निष्कर्ष निकालते हैं -

क) उपरोक्त पैरा 5 में उल्लिखित और पौलेण्ड, दक्षिण कोरिया, इंडोनेशिया, सऊदी अरब, रुस, ईरान, यू.एस.ए. और यूरोपीय संघ के मूल के अथवा वहां से निर्यातित ओक्सो एल्कोहल (नार्मल बुटानोल, आइसो बुटानोल, आइसो डेकानोल, आइसो अक्टानोल, 2-ईथाइल हैक्सानोल और नार्मल हैक्सानोल केवल) का निर्यात सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है जिसके परिणामस्वरूप पाटन हुआ है।

ख) भारतीय उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है ।

ग) क्षति संचयी रूप से संबद्ध देशों से हुए पाटित आयातों के कारण हुई है।

19. संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित ऊपर यथा-उल्लिखित ओक्सो एल्कोहल के सभी आयातों पर अंतिम निर्धारण होने तक अनन्तिम रूप से पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने पर विचार करना आवश्यक समझा गया है ।

20. प्राधिकारी ने पाटन मार्जिन के बराबर अथवा उससे कम पाटनरोधी शुल्क की धनराशि की सिफारिश करने पर विचार किया जिसे यदि वसूल किया जाएगा तो उससे घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त हो जाएगी । इस प्रयोजनार्थ, आयातों की औसत पहुँच कीमत की तुलना जांच अवधि के लिए निर्धारित याचिकाकर्ता की हानि रहित बिक्री कीमत के साथ की गई थी । जहां कहीं यह अंतर पाटन मार्जिन से कम पाया गया था वहां पाटन मार्जिन से कम शुल्क की सिफारिश की गई है ।

तदनुसार, यह प्रस्ताव किया गया है कि अंतिम निर्धारण होने तक सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम के सीमा शुल्क शीर्ष सं. 2905 के अंतर्गत आने वाले पौलेण्ड, दक्षिण कोरिया, इंडोनेशिया, सऊदी अरब, रुस, ईरान, यू.एस.ए. और यूरोपीय संघ के मूल के अथवा वहां से निर्यातित नार्मल बुटानोल, आइसो बुटानोल, आइसो डैकानोल, आइसो आक्टोनोल, 2- ईथाइल हैक्सानोल और नार्मल हैक्सानोल पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तिथि से अनन्तिम पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए ।

**2१- प्राधिकारी नीचे दी गई तालिका में उल्लिखित घनराशि के अनुसार संबद्ध देशों/क्षेत्रों और निर्यातकों के संबद्ध में पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं -**

अनुशंसित शुल्क की राशि

(रुपए प्रति मीट्रिक टन)

देश	नार्मल बुटानोल	आइसो बुटानोल	2-ईथाइल हैक्सानोल एवं अन्य ओक्सो- एल्कोहल्स
पोलैण्ड	1887	7033	7033
दक्षिण कोरिया	4878	7958	10728
रूस	2825	शून्य	2825
ईरान	3353	5788	5788
यू. एस. ए.	2473	शून्य	3690
यूरोपीय संघ	890	8662	5156
इंडोनेशिया	8382	8251	8382
सऊदी अरब	10669	10669	10669

"2-ईथाइल हैक्सानोल एवं अन्य ओक्सो एल्कोहल" शीर्ष के अंतर्गत अंतिम कालम में उल्लिखित शुल्क की राशि आईसोडेकानोल, आइसोऑक्टोनोल और नार्मल हैक्सानोल पर भी लागू होती हैं। जहां कहीं जांच के अधीन ओक्सो एल्कोहल के विशिष्ट स्वरूप का आयात किसी विशेष संबद्ध देश से नहीं किया जा रहा है, वहां उक्त संबद्ध देश से निर्यात किए जा रहे ओक्सो एल्कोहल के अन्य स्वरूपों के संबंध में उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर शुल्क की अवशिष्ट दर की सिफारिश की गई है।

22. इस प्रयोजनार्थ आयातों का पंहच मूल्य, सीमाशुल्क अधिनियम, 1975 की धारा 3,3क, 8-ख, 9 और 9-क के अंतर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर, सीमाशुल्क अधिनियम 1962 के अंतर्गत सीमाशुल्क विभाग द्वारा तय किया गया निर्धारणीय मूल्य होगा और उसमें सभी सीमाशुल्क शामिल होंगे।

#### ण. आगे की प्रक्रिया

23. प्रारंभिक निष्कर्षों को अधिसूचित करने के बाद निम्नलिखित प्रक्रिया अपनायी जाएगी: -

(क) प्राधिकारी इन निष्कर्षों पर सभी हितबद्ध पक्षों की टिप्पणियां आमंत्रित करेंगे और इन पर अंतिम निष्कर्षों में विचार किया जाएगा ;

(ख) उन निर्यातकों, आयातकों, याचिकाकर्त्ताओं तथा संबंधित समझे गए अन्य हितबद्ध पक्षों को प्राधिकारी द्वारा अलग से लिखा जा रहा है जो इस अधिसूचना के जारी होने की तिथि से 40 दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकते हैं। कोई अन्य हितबद्ध पक्ष भी इन निष्कर्षों के प्रकाशन की तिथि से 40 दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करवा सकता है।

(ग) प्राधिकारी अंतिम निष्कर्षों की घोषणा करने से पहले आवश्यक तथ्य उजागर करेंगे।

**MINISTRY OF COMMERCE****(Directorate General of Anti-Dumping & Allied Duties)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 3rd December, 1999

**PRELIMINARY FINDINGS**

**Subject : Initiation of anti-dumping investigation concerning import of Oxo Alcohols from Poland, South Korea, Indonesia, Saudi Arabia, Russia, Iran, USA and The European Union—Preliminary Findings.**

**No. 15/1/99-DGAD :—**Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof :

**A. PROCEDURE**

1. The procedure described below has been followed with regard to the investigation:
  - (i) The Designated Authority (hereinafter also referred to as Authority), under the above Rules, received a written application from Oxo Alcohols Industries Association on behalf of domestic industry alleging dumping of Oxo Alcohols (herein after also referred to as subject goods) originating in or exported from Poland, South Korea, Indonesia, Saudi Arabia, Russia, Iran, USA and The European Union;
  - (ii) Preliminary scrutiny of the application filed by petitioners revealed certain deficiencies, which were subsequently rectified by the petitioners. The petition was therefore considered as properly documented;
  - (iii) The Authority, on the basis of sufficient evidence submitted by the petitioner decided to initiate the investigations against imports of Oxo Alcohols from Poland, South Korea, Indonesia, Saudi Arabia, Russia, Iran, USA and The European Union. The Authority notified the embassies/delegations of Poland, South Korea, Indonesia, Saudi Arabia, Russia, Iran, USA and The European Union about the receipt of application for dumping

investigation before proceeding to initiate investigations in accordance with sub-rule 5(5) of the Rules;

- (iv) The Authority issued a public notice dated 29<sup>th</sup> July, 1999, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping investigations concerning imports of Oxo Alcohols classified under custom code 2905 of Schedule I of the Customs Tariff Act, 1975 originating in or exported from Poland, South Korea, Indonesia, Saudi Arabia, Russia, Iran, USA and The European Union (hereinafter also referred to as the subject countries);
- (v) The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known exporters (whose details were made available by the petitioners) and industry associations and gave them an opportunity to make their views known in writing in accordance with the rule 6(2);
- (vi) The Embassy/Delegation of the subject countries in New Delhi was informed about the initiation of the investigation in accordance with rule 6(3) with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter, petition and questionnaire sent to the exporters was also sent to the Embassy, alongwith a list of known exporters/producers;
- (vii) The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known importers (whose details were made available by petitioner) of Oxo Alcohols in India and advised them to make their views known in writing within forty days from the date of issue of the letter. A copy of the petition was also provided to other interested parties.
- (viii) Request was made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) & Director General of Commercial Intelligence & Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of Oxo Alcohols



made in India during the past three years, including the period of investigation.

- (ix) A number of parties requested for extension of time, which was allowed by the Authority for four weeks.
- (x) The Authority conducted on-the-spot investigation at the premises of the petitioners to the extent considered necessary.
- (xi) Additional information regarding injury was sought from the petitioners, which was also furnished;
- (xii) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties;
- (xiii) \*\*\*\*\*in this notification represents information furnished by the interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;
- (xiv) Investigation was carried out for the period starting from 1st April, 1998 to 31<sup>st</sup> March, 1999;
- (xv) Cost investigations were also conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the petitioners so as to ascertain if anti-dumping duty lower than dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry;
- (xvi) The Authority sent a questionnaire, to elicit relevant information, to the following known exporters, in accordance with Rule 6(4);
  - Arak Petrochemical Company- Iran
  - Petrochemical Commercial Company - Iran
  - Tabriz Petrochemical Complex – Iran
  - Eastman Chemical Company - USA

- Creatine Coating Co. Inc. - USA
- Alfa Aesar - USA
- ICC Chemical Corporation -USA
- Vinmar International Limited - USA
- Union Carbide - USA
- Artistech Chemical Corporation - USA
- Lucky Limited - Republic Of Korea
- L G Chemicals Limited - Republic Of Korea
- Zakłady Azotowe Kedzierzyn - Poland
- Al-Jubail Fertilisers Company - Saudi Arabia
- Pt. Petrowidada - Indonesia
- Huls Aktiengesellschaft - Germany
- BASF - Germany
- HELM AG, - Germany
- Hoechst Celanese - Germany
- Chemische Werke Huels - Germany
- Condea Chemie Gmbh - Germany
- Nestle Chemicals - Sweden
- Nizhnetamsk - Russia

(xvii) A questionnaire was sent to the following known importers calling for necessary information in accordance with rule 6(4);

- Rachna Plasticizers - Mumbai
- KLJ Plasticisers – New Delhi
- PCL Enterprises Limited - New Delhi
- Indo Nippon Chemical Company Limited - Mumbai

- HMG Industries Limited - Mumbai
- API Industrial Corporation - Delhi
- C J Shah & Company - Mumbai
- Harsh Kumar & Company - Mumbai
- Vikas Organics Pvt. Limited - New Delhi
- Kothari Polymers Limited - New Delhi
- Payal Chemicals Industries Limited - New Delhi
- Texpo Trading Private Limited - Mumbai
- Guljoy Industries Limited - Jodhpur Rajasthan

(xvii) Copies of Initiation Notice were also sent to Indian Plasticizers Manufacturers Association, FICCI, CII, ASSOCHAM etc. for wider circulation.

**B. PETITIONER'S VIEWS:**

2. The Petitioners have made the following points in their submissions:
  - (a) Oxo Alcohols is an important input for production of plasticisers and in the paint industry, pharmaceuticals, lube oil additives and acrylics. Oxo Alcohols are being produced in India for over 30 years. There are three manufacturers in India, viz National Organic Chemical Industries Ltd (NOCIL), The Andhra Petrochemicals Ltd. (APL) and Indu Nissan Oxo Chemical Industries Ltd (INOCIL). The combined capacity of the three producers is sufficient to largely meet the demand in the country.
  - (b) Propylene is the major raw material for the production of Oxo Alcohols. The prices of Naphtha based petrochemicals increased substantially in 1995-96. The period witnessed Oxo Alcohol prices crossing USD 1,200/MT. However, with the global recession in the

petrochemical industry, the prices of petrochemical products have fallen sharply. This has resulted in Oxo Alcohols' prices declining to as low as USD 300-350/MT. The decline in the prices of Oxo Alcohols is not commensurate with the decline in the prices of input materials. These low prices indicate a case of dumping. Evidently, in view of huge surplus capacities available and global recession, the Indian market has been found as an excellent opportunity to sell the product. The Indian market has witnessed large scale dumping of Oxo Alcohols from a number of countries.

- (c) Oxo Alcohol produced by the domestic industry is substitute for Oxo Alcohols being imported from Poland, South Korea, Indonesia, Saudi Arabia, Germany, Russia, Iran, Sweden, USA and Netherlands. The domestic industry is largely able to meet the demand for Oxo Alcohols of the country. However, exports from these countries have increased substantially and have caused material injury to the domestic industry. Domestic industry has a capacity of 87000 MT per annum. It has, however, been able to utilize only 55% of its capacity in the current year due to substantial increase in the dumped imports.
- (d) The manufacturers from Sweden, Germany and Netherlands are dumping Oxo Alcohols in India and these countries are members of European Union. There are many other producers of Oxo Alcohols in the European Union. In fact, goods are being imported from a number of other countries in the EU. There is no custom boundary in European Union and the prices prevailing in the European Union are in the same region. The imposition of anti-dumping duty will not be effective without imposing duty against imports of Oxo Alcohols on the European Union as a whole as other producers may start exporting Oxo

Alcohols at the prices at which it is being exported by the producers in Sweden, Germany and Netherlands, resulting in continued dumping in the Indian market, after imposition of anti-dumping duty against these three countries. Even circumventing Anti-dumping duty by the exporters/producers from these countries would not be difficult. Designated Authority is requested to initiate investigations against European Union severally as also Germany, Sweden and Netherlands individually.

- (e) The Indian Oxo Alcohols industry is suffering serious injury from the onslaught of dumping. The present international prices of USD 300-350/MT are significantly below the cost of production of Indian producers. Should this price trend continue in the Indian market, the indigenous producers would be forced to close down operations.
- (f) In view of the large-scale dumping of the products in India, causing severe injury to the Indian industry, the three producers have jointly filed a petition before the Designated Authority, Ministry of Commerce, through their Association, in the form and manner prescribed.
- (g) **The main submissions of the petitioners are:**
  - (i) Imports from the subject countries have increased significantly in absolute terms;
  - (ii) Imports from the subject countries have increased in relation to total imports of Oxo Alcohols in India;
  - (iii) Imports from the subject countries have increased in relation to demand of Oxo Alcohols in India. As a direct consequence, the market share of the domestic industry has declined;

- (iv) Production of Oxo Alcohols of the domestic industry has declined;
- (v) Capacity utilization of the domestic industry has declined;
- (vi) Sales in absolute volume of the domestic industry have declined;
- (vii) Selling prices of the domestic industry have declined steeply;
- (viii) Imports are significantly undercutting the selling prices of the domestic industry in spite of steep reduction in the selling prices;
- (ix) The export price has already declined to US \$ 310 pmt, landed cost of which is below the variable cost of production of the petitioners.
- (x) The profitability of the domestic industry has been severely eroded. The domestic industry has been forced to a situation of losses from a situation of profits.
- (xi) All the parameters affecting domestic industry collectively and cumulatively indicate that the domestic industry has suffered material injury from dumped imports. Further the extent of injury is aggravating every day with steep and continuous decline in the export price

### **C. VIEWS OF IMPORTERS, USERS & EXPORTERS :**

- 3.1 A number of importers and one Users Association have responded to the questionnaire and given their views on the investigations. Among the respondents are Indian Plasticizers Manufacturers Association, M/S KLJ Plasticizers, M/S KLJ Polymers & Chemicals Ltd., M/S PCL Enterprises Limited, M/S Vikas Organics Pvt. Limited, M/S Vision Organics Private Limited, M/S API Industrial Corporation, M/S N.K.Polymers and Manufacturing Company & others. The views submitted by them are summarised as follows:

(i) Oxo Alcohols is the generic name used for the group of Alcohols produced by Oxo Process. There is no substitutability between the various Oxo Alcohols. The individual Alcohols are Chemicals having definite specifications and applications and are marketed locally and internationally with their specifications. These can not be treated as 'Like Articles' and can not be substituted.

(ii) The Oxo Alcohols being manufactured in India are as follows:

1. Normal Butanol;
2. Iso Butanol;
3. Iso Decanol;
4. Iso Octanol; and
5. 2-Ethyl Hexanol.

Thus the investigation has to be restricted to indigenously manufactured Oxo Alcohols only and Petition needs modifications and resubmission covering the aforesaid Oxo Alcohols only.

(iii) The Import Statistics for 1998-99, period of Investigation, in the Petition are based on the information from Kandla Port and are not authenticated. The Import and Export Data of Oxo Alcohols need to be substantiated as published or obtained from DGCI&S or any other Government Agency with Article Code, Country of Import, Quantity and Value.

(iv) Some of the Countries included in the Petition have either 'nil' or negligible imports of Oxo Alcohols to India and can not be included for anti-dumping of Oxo Alcohols to India. Further the Imports during 1996-97 to 1998-99 have been of N-Butyl Alcohol and 2-Ethyl Hexanol only for which the wide gap exists between the indigenous production and the demand.

- (v) Unless the methodology adopted by the Petitioners for arriving at Normal Values and Export Prices is explained and duly substantiated by records, these values cannot be taken for alleged dumping.
- (vi) The cost of production is dependent on several factors and the determination of normal value on the basis of the estimates of the cost of production of Oxo Alcohols is not correct. Moreover, these have been based on basic raw material, process Chemicals and utilities. The feed stock in India and abroad is Naphtha, Gas, Propylene, Heptene, Nonene etc. and consumption norms vary with the feed stock, scale of production, technology etc. Basis of the Cost of Production adopted by the petitioners for normal value is approximate & unrealistic and cannot be accepted for Anti-Dumping investigation.
- (vii) Many of the foreign manufacturers have their own captive raw material plants and are also producing Plasticizers. Thus the advantage of backward and forward integration gives them the highest economic viability. Indu Nissan and APL are dependent on raw materials from other units and they are not equipped to import the raw materials in bulk available at lower prices from the overseas markets. Besides the raw materials being Petrochemicals are highly sensitive and fluctuate with the crude prices internationally.
- (viii) The sudden drop in the international prices of Oxo Alcohols in 1998-99 is due to the lower prices of Propylene. The imports during 1998-99 at lower prices of Oxo Alcohols cannot be treated as dumping to India and the period of Investigation selected by the Petitioners is not appropriate.
- (ix) The local manufacturer's plants are uneconomic, old, inefficient and have not kept pace with technological upgradation in the World and cannot compete unless their capacities are enhanced to international



levels and adopt the latest and cost effective technologies. None of the three manufacturers match the international scales of production and further protection to the existing units would not serve any purpose unless they decide to modernise and adopt international scales of production in the liberalised regime of India.

- (x) There has been shut down in APL from 14<sup>th</sup> September, 1997 to 21<sup>st</sup> May, 1998 due to major fire in HPCL, raw material supplier to APL. Indu Nissan is facing lot of problems including financial and non-cooperation by the Management. They are not even able to maintain their past production levels regularly. NOCIL is multiproduct Company and the capacity of their Naphtha cracker is 60,000 tonnes in terms of ethylene and is low and unviable. It has been set up in 1968 and have frequent break downs. Besides NBA and EHA are the minor items of their total manufacture and have the lowest priority. They have the approval for setting up Naphtha cracker of 3,00,000 tonnes capacity and so far no effective steps have been taken. The annual capacities of the local plants are very small varying from 27000 to 30000 tonnes compared to the capacities in excess of 100,000 tonnes installed by the foreign manufacturers.
- (xi) The leading foreign Oxo Alcohols manufacturers produce Phthalate Plasticizers and are keen to export Plasticizers as these bring higher value addition and realisation than Oxo Alcohols. They might not be keen to pursue the Anti-Dumping Duty Petition as their interest is fully protected and better covered by exports of Phthalate Plasticizers to India. The levy of Anti-Dumping Duty on Oxo Alcohols will not assist Oxo Alcohols Industry and will open flood gates for imports of Phthalate Plasticizers. Ultimately this will lead to the closure of Oxo

Alcohols and Phthalate Plasticizers Industry in India. Thus Anti-Dumping levy is neither in the interest of Oxo Alcohols Manufactures nor Phthalate Plasticizers.

- (xii) Oxo Alcohols are adequately protected by rupee devaluation and by the lowest levies on raw materials and the highest duty on the Import of Oxo Alcohols @ 35% and Surcharge @ 3.5% totaling 38.5% and SADD @ 4% at par with the Phthalate Plasticizers. As per the Government announced and accepted policies of Chelliah and other Committees recommendations, the Import Duty on intermediates like Oxo Alcohols has to be lower than the finished Phthalate Plasticizers. The same applies to other major raw material namely Phthalic Anhydride. This undue protection to Oxo Alcohols and Phthalic Anhydride is affecting the increase in the prices of Phthalate Plasticizers leading to larger Imports of the Plasticizers. Thus the Oxo Alcohols are enjoying highest protection and there are no justifications for further levy of Anti-Dumping Duty.
- (xiii) The manufacture of Phthalate Plasticizers is exclusively reserved for the Small Scale Sector and most of the Units are in the SSI Sector. This Sector is providing lot of direct and indirect employment. Most of foreign manufacturers of Oxo Alcohols are also producing Plasticizers and the local Plasticizers manufacturers are facing stiff competition as the Exports of value added Plasticizers is advantageous and preferred. In the circumstances, the levy of Anti-Dumping Duty on Oxo Alcohols would lead to the unemployment of lacs of workers due to the closure of both the Oxo Alcohols and Phthalate Plasticizers Industries.
- (xiv) There is no injury due to Imports of Oxo Alcohols to indigenous manufacturers who do not have adequate production capacity to meet

the local demand. No new/additional capacity of Oxo Alcohols is either under implementation or approved and none of the existing units are keen to upgrade their technology and effecting expansions to achieve the international Scales of production to meet the existing and future demand in India.

- (xv) The evidence of Dumping is based on assumptions and not facts and cannot be accepted. Further, the import statistics in the Petition are incorrect, the evidence of injury also fails.
- (xvi) Besides plasticizers, about 40% of Oxo Alcohols find applications in the paints, as solvent for lacquers, thinners, adhesives, paper and textile processing, pharmaceuticals, lube oil, synthetic lubricants, acrylates, vutyl acetate, resins, dyestuffs, as chemical intermediate etc. The views of these users need to be invited as none of the aforesaid users/Associations have been included in the list of known Importers and Users of Oxo Alcohols in India.
- (xvii) As per Hindustan Times dated 22<sup>nd</sup> September, 1999, APL has achieved a complete turn-around with gross profit roaring to Rs. 18 crore during April-August, 1999-2000 and has achieved a capacity utilization at 135%.
- (xviii) The indigenous manufacturers of Oxo Alcohols are not having sufficient stocks/production to meet the local demand and are regretting the supplies from the last few months. Further, they have increased the prices on several occasions and APL is contemplating to raise the price by Rs. 4/= per kg of 2-Ethyl Hexanol immediately. The order position, supplies made, stock position, regrets for the supplies and prices during 1999 may be called for from NOCIL, APL and Indu Nissan. As the indigenous manufacturers are not having adequate production and are

raising the local prices, it further establishes that there is no dumping of Oxo Alcohols in India.

(xix) The prices of Imported Oxo Alcohols during 1998-99 are at par with those prevailing in other countries and there is no dumping to India.

3.2 Exporters who responded in time have given following arguments :

- (i) M/s. Al-Jubail Fertilizer Company, Saudi Arabia have stated that out of ten products mentioned in the petition they produce only 2-EHA which is used primarily for the manufacture of Di-Octyl Phthalate (DOP). They have further stated that the quantity supplied by them during the period 1996-97 and 1997-98 are much below what has been alleged in the petition. They have further stated that one of the petitioners namely Indu-Nissan may be related to the one of the known importers i.e. Indo Nippon Chemicals. As regards, Andhra petrochemicals, they have stated that because of disruption of supply of raw-material from HPCL refinery in 1998 the plant was closed which resulted in losses for the company. It has also been stated that their supplies to India have been at the prices above those quoted in ICIS-LOR publications. They have stated that on the basis of the information provided by them as per the response to the questionnaire there is no dumping of 2-EH into the Indian market by Al-Jubail Fertilizer Company, Saudi Arabia and the anti-dumping proceedings against them be dropped.
- (ii) M/s. L.G. Chemical Ltd., Korea have furnished the information regarding exports by them to India of IBA, NBA and 2-EHA in the format given in the questionnaire. They have also furnished the information regarding their domestic sale.

- (iii) M/s. BASF Ludwigshafenm, Germany and M/s. Union Carbide Corporation, Danbury, USA have stated that they have not exported Oxo Alcohols to India during the period of investigation. M/s. P.T. Petrowidada, Indonesia have stated that they are manufacturer of Phthalic Anhydride and Maleic Anhydride only and their name should be excluded from investigations. M/s. CONDEA Chemie GmbH, Germany have stated that none of alcohols mentioned in the petition are produced by their company by Oxo process. Although n-butanol and n-hexanol are sold by them, these alcohols are produced by Ziegler process and therefore, are not considered being Oxo Alcohols. Further more they have shipped no n-butanol and quite small amounts of n-hexanol to India during the period of investigations, which in their opinion cannot be cause of injury claimed by the petitioners. However, no information in the prescribed format has been given by them.
- (iv) M/s ZAK, Poland have stated that they sold their product to the company from European Union on the FOB Rotterdam basis who in turn sold to Indian buyers with their independent right to create their own export price. Therefore, there is no basis to bring the ZAK, Poland up into the charge of using the dumping methods in case of export of their products to India. Reply in the format prescribed has not been given regarding information relating to exports to India & other countries, domestic sales & cost of production.

**D. Examination of issues raised**

4. The foregoing submissions made by the exporters, the importers, the petitioner and other interested parties, to the extent these are relevant as per Rules and to extent these have a bearing upon the case, have been

examined and considered and have been dealt with at appropriate places in these findings.

**E. Product under consideration**

5. The product involved in the present investigation is acyclic alcohols and their halogenated, sulphonated, nitrated or nitrosated derivatives (as specified in the Initiation Notice dated 29.07.1999 bearing No. 15(1)/99-DGAD). These are known as oxo alcohols in the commercial and technical parlance and defined under customs sub-heading no. 2905 of the Customs Tariff of India. The classification is, however, indicative only and is not binding on the scope of the present investigation.

In the initiation notice mentioned above following forms of oxo-alcohols were listed for the scope of the investigation :

2-Ethyl Hexanol (also known as 2-EHA)

Normal butanol (also known as NBA)

Iso butanol (also known as IBA)

Iso Octanol

Iso Decanol

Normal Hexanol

Heptanol (Iso Heptanol and Normal Heptanol)

Nonanol (Iso Nonanol and Normal Nonanol)

Tri Decanol

2 Propyl Heptanol.

The petitioners had alleged that there is a great amount of substitutability between these types of alcohols. However as stated above the importers have submitted that Oxo Alcohols being manufactured in India are only Normal Butanol, Iso Butanol, Iso

Decanol, Iso Octanol and 2-Ethyl Hexanol. However, it is seen that other than these types of Oxo Alcohols mentioned above normal hexanol is also being imported into India. Hence, it has been decided to restrict the investigation only to Normal Butanol, Iso Butanol, Iso Decanol, Iso Octanol 2-Ethyl Hexanol & Normal Hexanol.

In this context, Authority notes that distinct information relating to normal value, net export price, injury & other aspects of investigation is available only in case of Iso Butanol, Normal Butanol & 2 Ethyl Hexanol. Other oxo alcohols i.e. Iso Decanol, Iso Octanol & Normal Hexanol have, however, been found to be very close substitutes for 2 Ethyl Hexanol. Hence it has been decided to use the information & calculation made for 2 EHA for these oxo alcohols as well which are either being produced indigenously or being imported.

**F. Like Articles**

6. The petitioner have claimed that there are no significant differences in their product and the same imported from the said countries, which can have impact on price and quality. The two are comparable in terms of physical and chemical characteristics (size, chemical composition), manufacturing process and technology, functions and uses, product specifications, distribution and marketing and tariff classification of goods. The two are technically and commercially substitutable. Importers are interchangeably consuming imported and domestic Oxo Alcohols. The two are, therefore, Like Articles within the meaning of the Anti-Dumping Rules. In this regard, it is observed by the Authority, that though some importers have claimed differences of product in processing and quality over the petitioner's product, these differences

do not have any impact on the likeness of two products as both are used by the consumers interchangeably. The Authority finds that both have the same end-uses and both have the similar fundamental technical characteristics.

**G. Domestic Industry**

7. The petition has been filed by Oxo Alcohols Industries Association on behalf of Indu Nissan Oxo Chemical Industries Limited, Mumbai, National Organic Chemical Industries Limited, Mumbai and Andhra Petro Chemicals Limited, Hyderabad. The production of the petitioners constitute a major proportion in the total domestic production. The petitioners, therefore, satisfy the standing to file the present petition and constitute domestic industry within the meaning of the Rules.

It has been alleged by an exporter that Indu Nissan Oxo Chemical Industries are related to Indo Nippon Chemical Co. Ltd. who are importers of oxo alcohols. Indo Nippon Chemical Co. has made submissions in this case as an importer & is opposing the petition. Also it has been submitted that there are serious disputes between the two companies & one does not exercise any operational control over the other. It has therefore been decided not to treat the two companies as related companies.

**H. Countries involved:**

8. As stated in para 2 (d) above, the petitioners wanted the anti dumping investigation to be initiated against European Union severally as also against Germany, Sweden and Netherlands individually alongwith other countries viz. Poland, Iran, Saudi Arabia, South Korea, Indonesia, U.S.A. & Russia. However, while the request of the petitioners for initiating investigation against other countries was accepted, in regard



to European Union it was decided that since Germany, Sweden and Netherlands form a part of the Custom Union under the E.U., initiation of investigation against European Union is sufficient and there is no need to initiate investigation against Germany, Sweden and Netherlands individually.

**I. Dumping & examination of claims on Normal Value & Export Prices by the Authority:**

9. Under Section 9A(1)©, normal value in relation to an article means:

- (i) The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section(6); or
- (ii) when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either -
  - (a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
  - (b) the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transshipped

through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

Authority sent questionnaires to the exporters from the subject countries. The claim made by the exporters with regard to normal value and export price are as under:

**Korea PR :** In the questionnaire for the exporters following information was requested by the Authority :

- Transaction-wise details of sales made in the home market;
- Cost of production for sales in the home market, exports to India and exports to countries other than India;
- Evidence of the prices at which goods are being sold in the home market.

The Authority observes that since M/s.L.G.Chemicals Ltd. has not provided details on cost of production, it can not be said that all the sales in the home market permitted recovery of the cost of production. The sales in the home market can not therefore be claimed to be in ordinary course of trade. The Authority, therefore, proposes to disregard the normal value claimed by the exporter, for the purpose of preliminary findings, and adopts the normal value claimed by the petitioners. The normal value has been claimed by the petitioners at ex-factory level and, therefore, does not require any other price adjustments.

With regard to the export price, the Authority notes that the subject goods are produced by M/s. L.G. Chemicals Ltd. whereas the goods have been invoiced to India by M/s. L.G. International Corp. The company has however, not disclosed the price at which goods have been sold by M/s. L.G. Chemicals Ltd. to M/s. L.G. International Corp.

goods have been supplied by M/s. L.G. Chemicals Ltd. to M/s. L.G. International Corp. at prices which are lower than the prices at which goods have been exported to India and the difference in the two prices permitted recovery of the expenses incurred by M/s. L.G. International Corp. for exporting the goods to India. In fact, no details of expenses incurred by M/s. L.G. International Corp. on exports to India have been disclosed. Further, the exporter has not shown any price adjustment on account of interest expenditure, even though it is found from the evidence provided by the company that the goods have been sold at credit and the export price considered is the price inclusive of credit. The Authority has, however, for the purpose of preliminary findings, pending detailed investigations, considered CIF export price as claimed by the company. The Authority has not made an adjustment on account of interest also, pending further investigations. The exporter has claimed other price adjustments from the export price which are insurance, storage & overseas freight. The Authority has considered and allowed the above price adjustments, pending further investigations.

**Saudi Arabia :**

In their reply M/S Al-Jubail Fertilisers Company (SAMAD) have furnished transaction-wise details of export sales made to India, details regarding some of the exports made to third countries, ex-factory costs of exports sales to India and to other countries, income statement and other details for investigation period and for the years precedings the investigation period. It has been stated that there are no domestic sales of Oxo Alcohols in Saudi Arabia.

It appears from the information provided by the exporters that the goods produced by M/S SAMAD have been exported through M/S Saudi Basic Industries Corporation (SABIC) , who in turn have sold it through their affiliate which is M/S SABIC India Private Ltd. The price at which M/S SAMAD sell their goods to M/S SABIC have not been disclosed. Also, no adjustments regarding the payments made for or expenditure incurred by the marketing companies have been disclosed. Only adjustments made from the c.i.f. export prices are those of ocean freight and ocean insurance. The Authority accepts these submissions at the preliminary stage subject to verification pending final determination.

In the absence of domestic sales, the options available to the Authority for arriving at normal value are the exports made to third countries or the cost of production. The Authority notes that the exporters have not provided information with regard to countrywise exports of the subject goods to third countries. Information has been provided only regarding exports to one country other than India where the exports are being made at prices below those at which exports have been made to India. This information cannot be used for arriving at normal value as the evidence clearly shows that the exports have been made during the investigation period at prices which do not cover the cost of production.

The cost details furnished by the exporters are not supported by any documentary evidence and are not complete. No cost have been shown against the headings of 'manufacturers overheads' and 'interest cost'. Also, no fixed costs have been taken into account while arriving at the unit costs. No explanation have been given for unusually low

prices of raw materials which are much below the international prices stated to be prevailing during the investigation period even by importers. The cost data furnished are incomplete & the Authority, therefore, has decided to disregard the normal value claimed by the exporters for the purpose of preliminary findings and adopts the normal value claimed by the petitioners pending final determination.

**Other Countries :** The information as required to be submitted in the prescribed format by the exporters has not been received from any exporter from the rest of subject countries i.e. Iran, Poland, Indonesia, Russia, USA and the European Union. As no information on normal value in these countries has been furnished by the exporters or other interested parties, the Authority has considered the information provided by the petitioners for the purpose of arriving at normal value in these countries. Regarding the export price the information available from DGCIS as well as that furnished by the importers has been used for arriving at the export price at ex-factory level after making necessary adjustments.

**New exporters :** Some of the exporters/manufacturers have claimed that they have not exported to India during the period of investigations. It has been the practice to allow these exporters to apply for review as new exporter under Rule 22 of Anti-Dumping Rules mentioned above as and when they export to India.

10. **Dumping Margins:**

On the basis of the best information available, the Authority has arrived at the dumping margins in percentage terms (as % of export price &

after adjustments) in the case of subject countries for products under considerations as follows:

Country	NBA	IBA	2 EHA
Poland	69.82		56.65
South Korea	106.73	140.19	109.05
Russia	102.73	36.26	
Iran	107.85	130.1	
USA	50.67	77.85	69.79
European Union	62.56	130.77	45.5
Indonesia		164.03	104.23 *
Saudi Arabia			95

Dumping margins as determined for M/s L.G.Chemicals have been used for South Korea as a whole. Also dumping margins for M/s Al-Jubail Fertilisers Company (SAMAD), a subsidiary of M/s Saudi Basic Industries Corporation (SABIC) are applicable to all the imports from Saudi Arabia to India. Wherever the DGCI&S data show no import of a particular form of Oxo Alcohol from a particular subject country to India, the box relating to dumping margin for that particular form of Oxo Alcohols from the particular subject country has been left blank.

## **J. Injury**

11. Under rule 11 supra, Annexure-II when a finding of injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry. "taking into account all relevant facts, including the volume

of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such article.....” In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

Annexure II(iii) under Rule 11 *supra* further provides that “in cases where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to Anti dumping investigation, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such imports, only when it determines that the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent of the imports of the like article or where the export of the individual countries less than three percent, the imports cumulatively accounts for more than seven percent of the imports of like article, and cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.

The Authority notes that the margin of dumping and quantum of imports from subject countries are more than the deminimus limits above. Cumulative assessment of the effects of imports are appropriate since the export prices from the

subject countries were directly competing with the prices offered by the domestic industry in the Indian market.

For the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority has considered such further indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilization, sales quantum, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping etc. in accordance with Annexure II(iv) of the rules supra.

### **Quantum of imports**

The Authority has considered the statistics of the petitioner and the same published by Director General of Commercial Intelligence & Statistics, Calcutta, in this regards and finds that there is a marginal variation between the two. However, the Authority has relied upon the data relating to import volume, as published by DGCI&S, Calcutta, to analyse the import trend from the subject countries and the injury caused to the domestic industry on this count.

As per the statistics published by DGCI&S & submissions made by exporters, the quantum of imports of Oxo alcohols from various countries during 1998-99 are as under :



Country	Imports (in MTs.)
Poland	1188
South Korea	8274
Indonesia	1194
Saudi Arabia	2010
Russia	2428
Iran	2271
USA	4454
European Union	8251
<b>Total</b>	<b>30070</b>

Quantum of imports from each of the subject country is more than de-minimus. Cumulative assessment of the effects of imports is appropriate since the export prices from the subject countries directly compete with the prices offered by the domestic industry in the Indian market. None of the interested parties have raised any objection also to cumulative assessment. The Authority has, therefore, assessed injury to the domestic industry cumulatively from all the subject countries.

### **TREND IN IMPORTS FROM THE SUBJECT COUNTRIES**

Imports of Oxo Alcohols from the subject countries have increased significantly in absolute terms, as may be seen from the table below:

353169/99-9

Year	Imports in MT	% increase over 1995-1996
1995-96	7007	-
1996-97	19774	182
1997-98	22382	219
1998-99	30070	329

The Authority notes that there is significant increase in imports of Oxo Alcohols in absolute terms from the subject countries.

### **MARKET SHARE**

The share of imports from the subject countries in total imports of Oxo Alcohols were as under:

(Imports in kgs.)

Year	Total imports	Imports from subject countries	Market share of subject countries in imports
1995-96	11524	7007	60.81
1996-97	25980	19774	76.11
1997-98	24543	22383	91.20
1998-99	33451	30070	89.98

The Authority notes that the share of imports from the subject countries in total imports of Oxo Alcohols in India has increased significantly. Significant increase in imports from these countries has led to substantial increase in their

market share as is seen from the table below. As a direct consequence, the market share of domestic industry has declined.

<b><u>Year</u></b>	<b><u>Market share % in total demand</u></b>		
	<b>Subject Countries</b>	<b>Other Countries</b>	<b>Domestic Industry</b>
1995-96	11.58	7.46	80.96
1996-97	25.28	7.93	66.78
1997-98	30.61	2.95	66.44
1998-99	37.73	4.19	58.08

### **EXPORT PRICE**

Average import prices since 1995-96 have been as under:

<b>Year</b>	<b>Rate (Rs. Per mt)</b>
1995-96	29043
1996-97	24960
1997-98	25887
1998-99	18567

The Authority notes that the import price declined significantly over the years.

**SUMMARY OF THE ECONOMIC PARAMETERS OF THE  
DOMESTIC INDUSTRY FOR THE LAST THREE YEARS :**

**Volume in MT**

**Value in Rs. Lacs**

Industry As a whole	<u>1996-97</u>		<u>1997-98</u>		<u>1998-99</u>	
	Volume	Value	Volume	Value	Volume	Value
Installed Capacity	87000	-	87000	-	87000	-
Production	60705	-	53654	-	44092	-
Sales-Indigenous	52237	20907	48634	17602	46351	13589
Capacity Utilisation	69.78	-	61.67	-	50.68	-
Profit,(Loss)	-	147	-	(2382)	-	(5077)

**K. Conclusions on Injury:**

12. From the foregoing the following claims made regarding injury during the period of investigation by the domestic industry are confirmed:
- (a) Imports from the subject countries have increased significantly in absolute terms;
  - (b) Imports from the subject countries have increased in relation to total imports of Oxo Alcohols in India;
  - (c) Imports from the subject countries have increased in relation to demand of Oxo Alcohols in India. As a direct consequence, the market share of the domestic industry has declined;
  - (d) Production of Oxo Alcohols of the domestic industry has declined;
  - (e) Capacity utilization of the domestic industry has declined;
  - (f) Sales in absolute volume & value of the domestic industry have declined;
  - (g) Selling prices of the domestic industry have declined steeply;

- (h) Imports are significantly undercutting the selling prices of the domestic industry;
- (i) The profitability of the domestic industry has been severely eroded.

The Authority therefore concludes that the domestic industry has suffered material injury.

**L. Some general issues**

13. Some interested parties have claimed that manufacturers of Oxo Alcohol have been protected for several years by Government of India as their raw materials attract a very low rate of duty whereas rate of duty on Oxo Alcohol as well as DOP are very high. In this context it is pointed out that while working out injury to the domestic industry, the Authority considers the actual level of duties which also establishes that the domestic industry has been injured.

It has been also been argued that there is a wide gap between the domestic production and demand which is to be met by imports. Hence, imposition of duties on imports is not called for. In this context it is observed that the domestic industry is not required to be in a position to meet the entire demand so as to qualify to apply for imposition of anti-dumping duties as the objective of anti-dumping duties is to check unfair trade practices.

It has also been stated that the petitioners have not submitted clear information regarding normal value for which constructed cost of production has been used which is an unrealistic data and should not be accepted for anti-dumping investigations. In this context the Authority has provided sufficient opportunity to the exporters from the subject

countries for providing information specifically on normal value. However, none of the exporters have furnished the required information.

It has been stated that Andhra Petrochemicals Ltd. has achieved a complete turn around with gross profit reaching Rs. 18 Crores during April-August 1999-2000 and capacity utilization at 135% as per the reports appearing in the Newspapers. In their reply APL has stated that report appearing in Newspapers is malicious and has been contradicted by the company which has also been published in the newspapers.

It has also been argued that the petition should be brought to the notice of Indian Paints Association, Indian Chemical Manufacturers Association, Associations connected with Paper and Textile processing, Pharmaceuticals, Chemicals Auxiliaries, Plastics, Dyestuffs, etc. The Authority had issued the Initiation Notification in the Gazette of India. All the interested parties were supposed to be, and are in fact, aware of the present proceedings. Any interested party should have taken cognizance of the public notification and responded to the Authority. Since, other interested parties have preferred not to participate, the Authority has proceeded with the present investigations.

**M. Causal link**

14. In establishing that the material injury to the domestic industry has been caused by the imports from subject countries, the Authority holds that increase in quantum of imports from subject countries resulted in decline in the market share of petitioner. This had the effect of undercutting the prices of domestic product forcing the domestic industry to sell below its fair selling price. Resultantly, the domestic industry was

not in a position to realise its fair selling price and, therefore, incurred losses. The material injury to the domestic industry was, therefore, caused by the dumped imports from the subject countries.

**N. Indian Industry's interest and other issues**

15. The purpose of anti dumping duties, in general, is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.
16. It is recognised that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures, particularly if the levy of the anti dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of Oxo Alcohols. Imposition of anti dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.
17. To ascertain the extent of anti dumping duty necessary to remove the injury to the domestic industry, the Authority relied upon reasonable selling price of Oxo Alcohols in India for the domestic industry, by

considering the optimum cost of production at optimum level of capacity utilisation for the domestic industry.

### Conclusions.

18. After considering the foregoing, the Authority concludes :
  - (a) Oxo Alcohols described under para 5 above (Normal Butanol, Iso Butanol, Iso Decanol, Iso Octanol 2-Ethyl Hexanol & Normal Hexanol only) and originating in or exported from Poland, South Korea, Indonesia, Saudi Arabia, Russia, Iran, USA and the European Union have been exported below normal value, resulting in dumping.
  - (b) The Indian Industry has suffered material injury.
  - (c) The injury has been caused cumulatively by the dumped imports from the subject countries.
19. It is considered necessary to impose anti-dumping duty provisionally, pending final determination, on all imports of Oxo Alcohols as mentioned above originating in or exported from the subject countries.
20. The Authority considered to recommend the amount of Anti-Dumping Duty equal to the margin of dumping or less, which if levied, would remove the injury to domestic industry. The average landed price of the imports, for purpose, was compared with the non-injurious selling price of the petitioner determined for the period of investigation. Wherever the difference was less than the dumping margin, a duty lower than the dumping margin is recommended. Accordingly, it is proposed that provisional anti dumping duties be imposed, from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on Normal Butanol, Iso Butanol, Iso Decanol, Iso



Octanol, 2-Ethyl Hexanol, & Normal Hexanol originating in or exported from Poland, South Korea, Indonesia, Saudi Arabia, Russia, Iran, USA and the European Union falling under custom heading No. 2905 of Custom Tariff Act pending final determination.

21. The Authority recommends imposition of anti dumping duty in respect of subject countries/territories and exporters as per the amounts mentioned in the table below:

**Amount of duty recommended  
(Rs. Per MT)**

Country	Normal Butanol	Iso Butanol	2-Ethyl Hexanol & other Oxo-alcohols
Poland	1887	7033	7033
South Korea	4878	7958	10728
Russia	2825	Nil	2825
Iran	3353	5788	5788
USA	2473	Nil	3690
European Union	890	8662	5156
Indonesia	8382	8251	8382
Saudi Arabia	10669	10669	10669

The amount of duty mentioned in the last column under the heading "2-Ethyl Hexanol and other Oxo Alcohols" is also applicable to Iso Decanol, Iso Octanol and Normal Hexanol. Wherever the particular form of Oxo Alcohol subject to investigation is not being imported from a particular subject

country, residual rate of duty has been recommended on the basis of the data available on other forms of Oxo Alcohols being exported from that subject country.

22. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Section 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

**O. Further Procedure**

23. The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings :
- (a) The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final findings;
  - (b) Exporters, importers, petitioners and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days of the dispatch of this notification. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings.
  - (c) The Authority would disclose essential facts before announcing the final findings.

RATHI VINAY JHA, Designated Authority